



घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23

अंक : 31

गोरखपुर

18 फरवरी 2024

पृष्ठ : 06

मूल्य: 2/-

किसान आंदोलन से उत्तरी राज्यों को रोजाना 500 करोड़ रुपए का आर्थिक नुकसान: पीएचडीसीसीआई

उद्योग मंडल पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (पीएचडीसीसीआई) ने शुक्रवार को कहा कि किसान आंदोलन के लंबा चलने से उत्तरी राज्यों में व्यापार और उद्योग को 'गंभीर नुकसान' पहुंच सकता है। उद्योग मंडल का कहना है कि किसान आंदोलन से रोजगार को भारी नुकसान होने की आशंका है और इससे प्रतिदिन 500 करोड़ रुपये से अधिक का आर्थिक नुकसान होगा।

पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष संजीव अग्रवाल ने कहा, "लंबे समय तक चलने वाले आंदोलन से प्रतिदिन 500 करोड़ रुपये का आर्थिक



करता है। अग्रवाल ने कहा कि किसानों का आंदोलन पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ हिस्सों में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) मंत्रालय के व्यवसायों को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है।

उत्पादन प्रक्रियाओं को निष्पादित करने और उपभोक्ताओं की मांग को पूरा करने के लिए ऐसी इकाइयों का कच्चा माल बड़े पैमाने पर अन्य राज्यों से खरीदा जाता है। सबसे बड़ी मार पंजाब, हरियाणा और दिल्ली के एमएसएमई पर पड़ेगी। उन्होंने कहा, "पंजाब, हरियाणा और दिल्ली की संयुक्त जीएसडीपी मौजूदा कीमतों पर 2022-23 में 27 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान है। इन राज्यों में लगभग 34 लाख एमएसएमई हैं जो अपने संबंधित कारखानों में लगभग 70 लाख श्रमिकों को रोजगार देते हैं।"

दिल्ली पहुंचे कमलनाथ, भाजपा में शामिल होने पर तोड़ी चुप्पी

जब ऐसी कोई बात होगी तब बताऊंगा

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होने की अटकलों के बीच मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ ने शनिवार को अचानक अपना छिंदवाड़ा दौरा रद्द कर दिया। वह शनिवार को नई दिल्ली पहुंचे। यह पूछे जाने पर कि क्या वह बीजेपी में शामिल हो रहे हैं, मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम और कांग्रेस नेता कमल नाथ ने कहा कि आप सभी उत्साहित क्यों हो रहे हैं? यह इनकार करने के बारे में नहीं है। अगर ऐसा कुछ है तो मैं आप सभी को सूचित करूंगा।

जनवरी में कमलनाथ ने सत्तारूढ़ भाजपा में शामिल होने के सवाल को खारिज कर दिया था, लेकिन कहा था कि राजनीतिक नेता स्वतंत्र हैं और किसी भी संगठन से जुड़े होने के लिए बाध्य नहीं हैं। अफवाहों ने तब जोर पकड़ लिया जब कमल नाथ के बेटे नकुल नाथ



ने भी अपने एक्स अकाउंट में अपना बायो बदल लिया। अटकलों के मुताबिक कई विधायक भी कमलनाथ के साथ जा सकते हैं। बीजेपी प्रवक्ता नरेंद्र सलूजा ने सोशल मीडिया पर कमल नाथ और नकुल नाथ की फोटो पोस्ट करते हुए ट्वीट किया, 'जय श्री राम'। इसी को लेकर कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह से सवाल पूछा गया। दिग्विजय सिंह ने कहा कि कल रात मेरी कमल नाथ जी से बातचीत हुई। वह छिंदवाड़ा में हैं। दिग्विजय सिंह ने आगे

किया। ये वो शख्स हैं जिन्होंने अपना राजनीतिक करियर नेहरू-गांधी परिवार से शुरू किया था। आप उस शख्स से ये उम्मीद नहीं कर सकते कि वो सोनिया गांधी और इंदिरा गांधी के परिवार को छोड़ देगा। वीडो शर्मा से जब कमलनाथ के बीजेपी में शामिल होने की अटकलों के बारे में पूछा गया था तो उन्होंने कहा था कि कांग्रेस ने राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के निमंत्रण को खारिज कर दिया है। कांग्रेस में ऐसे लोग हैं जो इससे परेशान हैं।

कांग्रेस भगवान राम का अपमान करती है और कांग्रेस में ऐसे लोग हैं जो इससे दुखी हैं और हमें लगता है कि उन्हें मौका मिलना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि अगर आप जिनका नाम ले रहे हैं (कमलनाथ) को भी पीड़ा है तो उसका भी स्वागत है।

भूजल के नमूनों में फ्लोराइड की मात्रा अनुमेय सीमा से अधिक

नई दिल्ली। दिल्ली में 58 ट्यूबवेल से एकत्र किए गए भूजल के नमूनों में फ्लोराइड की मात्रा अनुमेय सीमा से अधिक पाई गई। दिल्ली सरकार द्वारा राष्ट्रीय हरित अभिकरण (एनजीटी) को सौंपी गई रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ है।

रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) ने एनजीटी के निर्देशों के बाद राष्ट्रीय राजधानी में 1,256 ट्यूबवेल से भूजल के नमूने एकत्र किए। केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री बिश्वेश्वर टुंडू ने पिछले साल चार दिसंबर को राज्यसभा को सूचित किया था कि 25 राज्यों के 230



जिलों के कुछ हिस्सों में भूजल में आर्सेनिक और 27 राज्यों के 469 जिलों में फ्लोराइड पाया गया है। दिल्ली सरकार की ओर से दाखिल जवाब के अनुसार उत्तर पश्चिमी दिल्ली के नरेला और बवाना में 56 ट्यूबवेल से भूजल के नमूने एकत्र किए गए जिनमें से 33 में फ्लोराइड की मात्रा अनुमेय सीमा से अधिक

पाई गई। रिपोर्ट कहती है कि नजफगढ़ जोन और नांगलोई के 70 ट्यूबवेल से लिए गए नमूनों में से 11 में फ्लोराइड की मात्रा अनुमेय सीमा से अधिक पाई गई। उत्तरी दिल्ली और उत्तर पूर्वी दिल्ली में चार ट्यूबवेल, पश्चिमी दिल्ली के पांच ट्यूबवेल और दक्षिण-पश्चिम दिल्ली में चार ट्यूबवेल के नमूनों में भी फ्लोराइड की अधिक मात्रा पाई गई। मध्य दिल्ली और दक्षिणी दिल्ली से एकत्र किए गए किसी भी नमूने में फ्लोराइड की मात्रा स्वीकार्य सीमा से अधिक नहीं थी।

तमिलनाडु में पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट, मौत, घायलों को कराया अस्पताल में भर्ती
विरुधुनगर। तमिलनाडु के विरुधुनगर जिले में एक पटाखा फैक्ट्री में शनिवार को हुए विस्फोट में कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। स्थानीय लोगों के मुताबिक, विस्फोट की तीव्रता इतनी जबरदस्त थी कि पटाखा फैक्ट्री के पास की चार इमारतें विस्फोट में नष्ट हो गईं। फैक्ट्री का मालिक विजय नाम का व्यक्ति था और यह शहर के वेम्बकोट्टई इलाके में स्थित थी। घटना के बाद पुलिस और अग्निशमन विभाग की एक टीम मौके पर पहुंची और घायलों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया।



भाजपा की ओर से बार-बार इशारा किया जाता रहा है कि अयोध्या विवाद का हमने निपटारा किया है। अब हमें काशी और मथुरा विवाद का भी निपटारा करना है। हाल में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बयान से भी कुछ इसी तरीके का संदेश मिला था।



अयोध्या के बाद मथुरा की बारी!

चुनाव में कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह विवाद को बड़ा मुद्दा बनाने की तैयारी

नई दिल्ली। दिल्ली में भाजपा की दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन की बैठक हो रही है। इस बैठक में देश भर से 11000 से ज्यादा पदाधिकारी शामिल हो रहे हैं। बताया जा रहा है कि इस बैठक के जरिए कहीं ना कहीं लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा राजनीति बन सकती है। चुनाव को लेकर ही पार्टी की ओर से महामंथन किया जा रहा है। इस बैठक में राम मंदिर लेकर भी प्रस्ताव लाया जा सकता है। इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद किया जाएगा। लेकिन इस बैठक में मथुरा के कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह विवाद को भी बड़ा मुद्दा बनाने की तैयारी है।

ऐसा इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि राम मंदिर का वादा पूरा करने के बाद भाजपा के कार्यकर्ता ऐसे बैठक में हरे कृष्ण गा रहे हैं। इससे कहीं ना कहीं पार्टी यह संदेश देने की कोशिश कर रही है कि कृष्ण लला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे। दरअसल, भाजपा की ओर से बार-बार इशारा किया जाता रहा है कि अयोध्या विवाद का



हमने निपटारा किया है। अब हमें काशी और मथुरा विवाद का भी निपटारा करना है। हाल में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बयान से भी कुछ इसी तरीके का संदेश मिला था। योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का जिक्र करते हुए काशी और मथुरा की तरफ इशारा किया और कहा कि अयोध्या का मुद्दा जब लोगों ने देखा

तो नंदी बाबा ने भी इंतजार किए बगैर रात में बैरिकेड तोड़वा डाले और अब हमारे कृष्ण कन्हैया भी कहाँ मानने वाले हैं।

मुख्यमंत्री ने किसी का नाम लिये बगैर कहा कि पांडवों ने कौरवों से सिर्फ पांच गांव मांगे थे लेकिन सैकड़ों वर्षों से यहां की आस्था केवल तीन (अयोध्या, काशी और मथुरा) के लिए बात कर रही है। उन्होंने कहा, "तीन के लिए भी इसलिए क्योंकि वे विशिष्ट स्थल हैं। वे सामान्य नहीं हैं। ईश्वर की धरती हैं। लेकिन एक ज़िद है और इस ज़िद में जब राजनीतिक तड़का पड़ने लगता है और वोट बैंक बनाने की राजनीति होने लगती है तो वहीं से विवाद की स्थिति खड़ी होने लगती है।" आदित्यनाथ ने कहा, "हमने तो केवल तीन जगह मांगी हैं। अन्य जगहों के बारे में कोई मुद्दा नहीं था। अब अयोध्या का मुद्दा जब लोगों ने देखा तो नंदी बाबा ने भी कहा कि हम काहे इंतजार करें। उन्होंने भी इंतजार किए बगैर रात में बैरिकेड तोड़वा डाले और हमारे कृष्ण कन्हैया भी कहाँ मानने वाले हैं।"

चलती कार की छत पर

खतरनाक स्टंट करने वालों को पुणे पुलिस का 'इनाम'!

पुणे। पुणे पुलिस ने एक्स पर एक पोस्ट साझा करते हुए कहा कि उन्हें पुणे से लगभग 15 किमी दूर पिंपरी-चिंचवड में एक सड़क पर स्टंट करते हुए दो लोग मिले। उन्होंने एक वीडियो पोस्ट किया जिसमें एक लड़का चलती कार की छत पर बैठा था।

पुलिस ने एक तस्वीर भी साझा की जिसमें दोनों को भुगतने वाले परिणामों को दिखाया गया है। इस कृत्य को "स्टंटबाजी" कहते हुए, पुलिस ने अपने पोस्ट में टैल्को रोड पर एक चलती कार की छत पर स्टंट करते हुए एक व्यक्ति का वीडियो साझा किया, जब वाहन एक व्यस्त सड़क से गुजर रहा था। पोस्ट के अनुसार, पुलिस ने अपराधियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 279 और 336 और मोटर वाहन अधिनियम की धारा 184, 119 और 177 के तहत मामला दर्ज करके उन्हें "पुरस्कार" दिया। स्टंट में प्रयुक्त वाहन भी जब्त कर लिया गया है।



नामांकन दाखिल करने की समय सीमा तय

नई दिल्ली। राज्यसभा की 56 सीटों के लिए 27 फरवरी को होने वाले द्विवार्षिक चुनाव के लिए गत गुरुवार को नामांकन दाखिल करने की समय सीमा समाप्त हो गई। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जेपी नड्डा और कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी सहित अधिकांश उम्मीदवारों के निर्विरोध निर्वाचित होने की संभावना है। जिन राज्यों की राज्यसभा सीटों पर चुनाव हो रहे हैं उनमें उत्तर प्रदेश की 10, महाराष्ट्र तथा बिहार की छह–छह, पश्चिम बंगाल तथा मध्य प्रदेश की पांच–पांच, गुजरात तथा कर्नाटक की चार–चार, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, राजस्थान और ओडिशा की तीन–तीन और उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, हरियाणा एवं हिमाचल प्रदेश की एक–एक सीट शामिल हैं।

बता दें, राज्यसभा चुनाव 2024 के चुनाव में नामांकन वापस लेने की आखिरी तारीख 20 फरवरी है। आवश्यकता पड़ने पर मतदान 27 फरवरी को सुबह नौ बजे से शाम चार बजे तक होगा और मतगणना उसी दिन शाम पांच बजे से होगी। उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में भाजपा की ओर से जीत की संभावना के अतिरिक्त (संख्या बल के हिसाब से) एक–एक उम्मीदवार ज्यादा उतारे जाने से इन राज्यों में मुकाबला रोचक हो गया है। उत्तर प्रदेश में भाजपा के आठ उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल किया है जिनमें पूर्व केंद्रीय मंत्री आरपी एन सिंह, पूर्व सांसद चौधरी तेजवीर सिंह, राज्य में पार्टी के महासचिव अमरपाल मौर्य, राज्य की पूर्व मंत्री संगीता बलवंत, पार्टी प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी, पूर्व विधायक साधना सिंह, आगरा के पूर्व महापौर नवीन जैन और स्थानीय उद्योगपति और पूर्व सपा नेता संजय सेठ शामिल हैं।

जया बच्चन को सपा ने फिर से बनाया उम्मीदवार : समाजवादी पार्टी (सपा) ने जया बच्चन को फिर से उम्मीदवार बनाया है जबकि इस बार पूर्व सांसद राम. जीलाल सुमन और सेवानिवृत्त आईएसएस अधिकारी आलोक रंजन को भी टिकट दिया है. भाजपा के सात प्रत्याशियों ने बुधवार को नामांकन दाखिल किया था। सपा के तीन उम्मीदवारों ने मंगलवार को नामांकन पत्र भरे थे। उत्तर प्रदेश की 403 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा के 252, सपा के 108 और कांग्रेस के दो सदस्य हैं। सदन में भाजपा के सहयोगी अपना दल (सोनेलाल) के 13 जबकि निषाद पार्टी के छह सदस्य हैं। रालोद के नौ, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के छह, जनसत्ता

दल लोकतांत्रिक के दो और बसपा का एक सदस्य है। उग्र में राज्यसभा प्रत्याशी को जीतने के लिये 37 वोट चाहिए. 403 सदस्यों वाली उग्र विधानसभा में इस समय कुल 399 सदस्य हैं. सेठ के मैदान में उतरने से यहां मुकाबला रोचक हो गया है। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने इस बार लोकसभा चुनाव 2024 नहीं लड़ने का एलान किया है, लेकिन उन्होंने राजस्थान से राज्यसभा चुनाव के लिए नामांकन किया है। उन्होंने गुरुवार को उत्तर प्रदेश के रायबरेली निर्वाचन क्षेत्र के मतदाताओं को एक भावुक पत्र लिखा और बताया कि वह स्वास्थ्य और उग्र संबंधी परेशानियों के कारण आगामी लोकसभा चुनाव नहीं लड़ रही हैं। भाजपा के चुन्नीलाल गरासिया और मदन राठौर ने राज्य की अन्य दो सीटों के लिए अपना नामांकन दाखिल किया है।

भाजपा में शामिल हुए पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण, बनाया राज्यसभा प्रत्याशी महाराष्ट्र से भाजपा ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण को मैदान में उतारा है। कांग्रेस छोड़ने के अगले ही वह भाजपा में शामिल हुए थे। इसके अगले ही दिन उन्हें राज्यसभा का उम्मीदवार घोषित किया गया था। शिवसेना ने मिलिंद देवरा को उम्मीदवार बनाया है। उन्होंने पिछले महीने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था। कांग्रेस ने चंद्रकांत हंडोरे और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) ने प्रफुल्ल पटेल को उम्मीदवार बनाया है। संसद के ऊपरी सदन में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के मौजूदा सदस्यों की संख्या 114 हैं। इसमें भाजपा के 93 सदस्य शामिल हैं. कांग्रेस के पास 30 सीटें हैं, जो दूसरी सबसे ताकतवर पार्टी है। 50 सदस्य दो अग्रेल को और छह तीन अग्रेल को सेवानिवृत्त होंगे। जिन सांसदों का कार्यकाल समाप्त हो रहा है उनमें पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, भूपेंद्र यादव, मनसुख मांडविया और वी मुरलीधरन एवं भाजपा के अनिल बलूनी और सुशील कुमार मोदी शामिल हैं।

भाजपा ने कई वरिष्ठ नेताओं के काटे पत्ते : भाजपा ने कई वरिष्ठ नेताओं और निवर्तमान राज्यसभा सांसदों को राज्यसभा चुनाव के इस दौर में फिर से नामित नहीं किया है। ऐसे संकेत है कि पार्टी इनमें से कुछ को आगामी लोकसभा चुनाव में उतार सकती है।

भाजपा ने केंद्रीय मंत्रियों अश्विनी वैष्णव और एल मुरुगन को क्रमशः ओडिशा और मध्य प्रदेश से

राज्यसभा उम्मीदवार के रूप में फिर से नामित किया है। 28 निवर्तमान सांसदों में से भाजपा ने केवल चार नड्डा, दो केंद्रीय मंत्रियों और राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी को फिर से उम्मीदवार बनाया है।

वैष्णव 2019 में बीजद के समर्थन से संसद के उच्च सदन के लिए चुने गए थे और ओडिशा में सत्तारुढ़ पार्टी ने बुधवार को उन्हें फिर से समर्थन दिया। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने सागरिका घोष, सुभिता देव, मोहम्मद नदीमुल हक और ममता बाला ठाकुर को मैदान में उतारा है जबकि भाजपा ने समिक भट्टाचार्य को मैदान में उतारा है।

हिमाचल की एकमात्र सीट के लिए सीधा मुकाबला : हिमाचल प्रदेश से राज्यसभा की एकमात्र सीट के लिए कांग्रेस के अभिषेक मनु सिंघवी ने नामांकन दाखिल किया। हिमाचल प्रदेश में राज्यसभा की एकमात्र सीट के लिए अब सीधा मुकाबला होने की संभावना है क्योंकि भाजपा ने कांग्रेस सरकार के पूर्व मंत्री हर्ष महाजन को सिंघवी के खिलाफ मैदान में उतारा है। भाजपा के कदम ने सिंघवी के निर्विरोध राज्यसभा में निर्वाचित होने की कांग्रेस की आशा को धूमिल कर दिया। पूर्व केंद्रीय मंत्री रेणुका चौधरी एक अंतराल के बाद तेलंगाना से राज्यसभा में वापसी करेंगी। चौधरी (69) दो बार लोकसभा और तीन बार राज्यसभा की सदस्य रह चुकी हैं। एम अनिल कुमार यादव को भी इस दक्षिणी राज्य से मैदान में उतारा गया है जहां पार्टी दिसंबर में सत्ता में आई थी।

जीसी चंद्रशेखर को पार्टी ने फिर से बनाया उम्मीदवार

पिछले वर्ष हरियाणा से राज्यसभा का चुनाव लड़ने वाले पूर्व केंद्रीय मंत्री अजय माकन को कांग्रेस ने पार्टी शासित कर्नाटक से उम्मीदवार बनाया है। कांग्रेस ने यहां सैयद नसीर हुसैन को भी फिर से उम्मीदवार बनाया है, जो कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड्गे के कार्यालय में समन्वयक हैं।

यह कर्नाटक से राज्यसभा सदस्य के रूप में हुसैन का दूसरा कार्यकाल होगा. कर्नाटक से कांग्रेस नेता जी सी चंद्रशेखर को पार्टी ने फिर से उम्मीदवार बनाया है। कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और जनता दल (सेकुलर) गठबंधन द्वारा राज्यसभा चुनाव के लिए दूसरा उम्मीदवार मैदान में उतारने के बाद मुकाबला रोचक हो गया है क्योंकि गठबंधन संख्याबल के अनुसार पिछले वर्ष हरियाणा से राज्यसभा का चुनाव लड़ने वाले पूर्व केंद्रीय मंत्री अजय माकन को कांग्रेस ने पार्टी शासित कर्नाटक से उम्मीदवार बनाया है। कांग्रेस ने यहां सैयद नसीर हुसैन को भी फिर से उम्मीदवार बनाया है, जो कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड्गे के कार्यालय में समन्वयक हैं। यह कर्नाटक से राज्यसभा सदस्य के रूप में हुसैन का दूसरा कार्यकाल होगा. कर्नाटक से कांग्रेस नेता जी सी चंद्रशेखर को पार्टी ने फिर से उम्मीदवार बनाया है। कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और जनता दल (सेकुलर) गठबंधन द्वारा राज्यसभा चुनाव के लिए दूसरा उम्मीदवार मैदान में उतारने के बाद मुकाबला रोचक हो गया है क्योंकि गठबंधन संख्याबल के अनुसार

चार में से केवल एक सीट पर ही जीत दर्ज कर सकता है। राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनाव के तहत कर्नाटक की चार सीट पर 27 फरवरी को चुनाव होना है जिसके लिए विधानसभा सदस्य मतदान करेंगे।

बिहार में कांग्रेस और आरजेडी ने इन नेताओं पर जताया भरोसा:

राज्य में सत्तारुढ़ कांग्रेस पार्टी के 224 सदस्यीय विधानसभा में 135 सदस्य हैं। पार्टी को सर्वोदया कर्नाटक पक्ष के दर्शन पुत्तनियाह के साथ–साथ दो निर्दलीय विधायकों का समर्थन भी प्राप्त है। जिनके बल पर वह तीन सीट पर अपना कब्जा बरकरार रख सकती है। वही, भाजपा और जद(एस) के क्रमशः 66 और 19 सदस्य हैं और वे केवल एक सीट जीतने की स्थिति में हैं।

कांग्रेस ने बिहार इकाई के प्रमुख अखिलेश प्रसाद सिंह को राज्य से फिर से उम्मीदवार बनाया है। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने घोषणा की कि मनोज कुमार झा और संजय यादव बिहार में राज्यसभा चुनाव के लिए पार्टी के उम्मीदवार होंगे। मध्य प्रदेश से मुरुगन के अलावा भाजपा ने दलित संत उमेश नाथ महाराज, पिछड़ा वर्ग की महिला नेता माया नरोलिया और किसान नेता बंशीलाल गुर्जर को मैदान में उतारा है।

हीरा कारोबारी गोविंद ढोलकिया बीजेपी से हुए नामित

कांग्रेस ने पार्टी की राज्य इकाई के कोषाध्यक्ष अशोक सिंह को नामित किया, जिन्होंने आज भोपाल में अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी सहित राज्य के शीर्ष राजग नेताओं की मौजूदगी में जदयू के संजय कुमार झा और भाजपा के भीम सिंह तथा धर्मशीला गुप्ता ने अपने नामांकन पत्र दाखिल किए।

छत्तीसगढ़ से राज्यसभा की एकमात्र सीट के लिए भाजपा के देवेंद्र प्रताप सिंह ने नामांकन पत्र दाखिल किया। गुजरात में भाजपा ने केंद्रीय मंत्रियों पुरुषोत्तम रूपाला और मांडविया को टिकट नहीं दिया जिन्होंने 2018 का चुनाव इसी राज्य से जीता था। उनके आगामी लोकसभा चुनाव में मैदान में उतारे जाने की संभावना है।

नड्डा के अलावा पार्टी ने राज्य से अपने नेताओं जसवंत सिंह परमार और मयंक नायक तथा हीरा कारोबारी गोविंद ढोलकिया को मैदान में उतारा है।

सरस्वती साधक—साधिका सम्मान का आयोजन संपन्न



फतेहाबाद (आगरा)। नगर पंचायत अध्यक्ष कार्यालय पर सरस्वती जयंती (बसंत पंचमी) के शुभ अवसर पर बृजलोक साहित्य कला संस्कृति अकादमी (रजि.) द्वारा संचालित पुस्तकालय ऋषि वैदिक साहित्य पुर. तकालय द्वारा अध्यक्ष नगर पंचायत श्रीमती बबीता शल्या को संस्था अध्यक्ष मुकेश कुमार ऋषि वर्मा, संस्था सहयोगी भूरीसिंह ने “सरस्वती साधिका सम्मान” भेंट कर सम्मानित किया । सम्मान स्वरुप उन्हें प्रशस्ति पत्र, पटका व मुकेश कुमार ऋषि वर्मा द्वारा रचित बाल कविता संग्रह – चुलबुली कविताएं (पुस्तक) भेंट की । उन्हें यह सम्मान समाज, शिक्षा, राजनीति की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए प्रदान किया गया है । इनके साथ ही देशभर के साहित्य साधकों व शिक्षाविदों को उनका सम्मान पंजीकृत डाक –कोरियर से भेजा गया।

ज्ञात हो ऋषि वैदिक साहित्य पुस्तकालय



राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गत दिनों गुरुवार को जयपुर सहित सात संभागों से अयोध्या जाने वाली रोडवेज बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान श्री राम हमारे रोम–रोम में बसते हैं तथा वे करोड़ों भारतीयों की आस्था के केंद्र हैं।

कानून का सम्मान, राष्ट्रवाद लोकतंत्र और योग्यता का सम्मान: धनखड़

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कानून के समक्ष समानता को लोकतांत्रिक शासन के लिए सर्वोत्कृष्ट करार देते हुए गुरुवार को कहा कि भ्रष्टाचार और संरक्षण युवा प्रतिभा के लिए सबसे घातक है। उपराष्ट्रपति ने आज दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कॉलेज के 125 वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि भ्रष्टाचार और संरक्षण युवा नवोन्मेषी दिमागों के लिए सबसे घातक हैं। इन से योग्यता और क्षमता प्रभावित होती है। उन्होंने कहा कि युवा लोग भ्रष्टाचार से नफरत करते हैं क्योंकि वे भाई–भतीजावाद, प क्षपात से ठगा हुआ महसूस करते हैं। प्रशासनिक सुधारों की चर्चा करते हुए धनखड़ ने कहा कि सत्ता गलियारे अब भ्रष्ट तत्वों से पूरी तरह मुक्त हो गए हैं और एक पारदर्शी, जवाबदेह प्रणाली स्थापित हो गई है। उन्होंने कहा कि योग्यता का बोलबाला है और युवा आकांक्षा कर सकते हैं, अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं और अपनी

क्षमता का पूरा लाभ ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि कानून के समक्ष समानता लो. कर्तांत्रिक शासन के लिए सबसे अपरिहार्य विशेषता है। उन्होंने कहा कि अब कोई भी अंकुश लगा रहा है। विशेष रूप से कानून से ऊपर नहीं है, कानून के लंबे हाथ हर किसी तक पहुंच रहे हैं, का यह प्रमुख दायित्व है कि वे कानून नहीं सोचा था कि उन्हें कानून के प्रति स्थापित करें।



जवाबदेह ठहराया जाएगा। उपराष्ट्रपति ने कहा कि कानून का सम्मान राष्ट्रवाद, लोकतंत्र और योग्यता का सम्मान है।

कानून का सम्मान भ्रष्टाचार पर कानून से ऊपर नहीं है, कानून के लंबे सत्ता और सत्ता के पदों पर बैठे लोगों के प्रति सम्मान दिखाकर एक उदाहरण स्थापित करें।

भारत की कूटनीतिक सफलता

भारतीय नौ सेना के आठ पूर्व कर्मियों का कतर की जेल से रिहा होना भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत है। इन सभी लोगों को तीन महीने पहले संदिग्ध जासूसी के एक मामले में मौत की सजा सुनाई गई थी। परराष्ट्र मंत्रालय का कहना है कि रिहा किए गए आठ भारतीयों में से सात भारत लौट भी आए। यह पूरे देश के लिए हर्ष और प्रसन्नता की बात है कि कतर के अमीर ने मानवीय आधार पर नौ सेना के इन पूर्व कर्मचारियों और अधिकारियों को रिहा करने का निर्णय किया। कतर के अमीर का पफैसला उनकी सहृदयता और उदारता का परिचायक है। इस रिहाई के लिए भारत सरकार पहले से ही प्रयासरत रही।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और परराष्ट्र मंत्री एस. जयशंकर की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय मानी जाएगी।

नौ सेना के पूर्व कर्मियों को विगत 26 अक्तूबर को कतर की एक अदालत ने 28 दिसम्बर को मौत की सजा को कम करके उन्हें बड़ी राहत दी थी। पूर्व नौ सैन्यकर्मियों को अलग–अलग सजा सुनाई गई थी।

निजी कम्पनी अल दहरा के साथ काम करनेवाले भारतीय नागरिकों को जासूसी के एक कथित मामले में अगस्त 2022 में गिरफ्तार किया गया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने काप28 शिखर सम्मेलन के अवसर पर कतर के अमीर शेख तमीम बिनहमद–अल– थानी से मुलाकात की थी और द्विपक्षीय साझेदारी और कतर में रहने वाले भारतीय समुदाय की भलाई पर भी चर्चा की थी।

परराष्ट्र मंत्रलय के प्रवक्ता का कहना है कि पूर्व नौसेना कर्मियों को सजा सुनाए जाने के बाद कतर की सर्वोच्च अदालत में अपील करनेके लिए साठ दिनों का समय भी मिल गया था।

भारत की कानूनी टीम लगातार इस दिशा में काम कर रही थी। कानूनी टीमके पास गोपनीय अदालती आदेश भी है, जिसमें मौत की सजा को कारावास की शर्तों में बदलने का विवरण दिया गया था।

आठ भारतीयों को अज्ञात कारावास में भी रखा गया था। इनकी जमानत याचिकाएं भी खारिजकर दी गई थीं जिससे उनकी मुश्किलें बढ़ गई थीं।

इनकी रिहाई के लिए कई स्तरों पर कानूनी लड़ाई लड़ी गई थी जिसमें भारत को बड़ी सफलता मिली। सभी आठ भारतीयों की स्वदेश वापसी से उन्हें नया जीवन मिला है और उनके परिजनों तथा देश को राहत मिली है।



पूर्व मंत्री सैयद मुस्ताक बुखारी गुरुवार को भाजपा में हुए शामिल

गुलाबी ठंड गड़बड़ा रहा बीपी-शुगर



गोरखपुर। पतंजलि योग पीठ के जिला प्रमारी हरिनारायण दूरे बताते हैं कि शरीर को फिट रखने के लिए हमें वात, कफ व पित्त को नियंत्रित करना होता है। वात पर नियंत्रण के लिए नियमित तौर पर भोर में साढ़े तीन से पांच बजे के बीच उठना और नित्यक्रिया से निबटना जरूरी है। फरवरी की शुरुआत के साथ ही मौसम का मिजाज भी एकदम से बदल गया है। दिन का तापमान 20 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच गया है तो वहीं रात का तापमान लगातार कम-ज्यादा हो रहा है। इससे लोग बीमार पड़ने लगे हैं। सबसे अधिक असर मधुमेह व रक्तचाप के मरीजों पर है। जनरल फिजिशियन डॉ. आरपी त्रिपाठी बताते हैं कि इन दिनों जो मरीज बढ़े हैं,

उनमें से अधिकतर अनियमित दिनचर्या के चलते बीमार हुए हैं। अभी लोग सर्दी के चलते व्यायाम कम कर रहे हैं और खाने में भी परहेज नहीं कर रहे। इसका असर उनके शुगर लेवल पर पड़ रहा है। वहीं दिन गर्म होने के चलते लोग कम गर्म कपड़ों के साथ बाहर निकल रहे हैं, और शाम को ठंड बढ़ने पर वही लोग चपेट में आ रहे हैं। ऐसे लोगों का ब्लड प्रेशर भी बढ़ा रह रहा है। योग व प्राणायाम से मिल सकता है आराम मधुमेह रोग हार्मोंस के अनियंत्रित स्त्राव के चलते होता है। इंसुलिन को संतुलित रखने के लिए खुद को फिट रखना जरूरी है। इसके लिए अनुलोम-विलोम की क्रिया

होती है। लेकिन इसके करने से पहले शरीर के अन्य सभी अंगों को सक्रिय करने के लिए कुछ आसान और भी करने होते हैं। इसके अलावा मस्तिष्क को एकाग्रचित्त व शांत रखने के लिए भी कुछ योगाभ्यास व प्राणायाम आदि कराए जाते हैं। ये सभी क्रियाएं नियमित अभ्यास से आसान हो जाती हैं।

इसी प्रकार उच्च रक्तचाप के लिए भी अनियमित दिनचर्या ही जिम्मेदार है। इन दोनों बीमारियों पर नियंत्रण के लिए योग व प्राणायाम सबसे बेहतर माध्यम है। इसके अलावा अपने भोजन पर भी नियंत्रण करना बहुत जरूरी है। आयुर्वेद ही नहीं ऐलोपैथ के विशेषज्ञ भी मानते हैं कि आहार का स्वास्थ्य पर सीधा असर होता है।

वसंत पंचमी पर खुला वसंती कमरा



श्रीजी ने श्रद्धालुओं को दिए दर्शन जयकारों से गूंज उठा परिसर

मथुरा। तीर्थनगरी मथुरा के वृंदावन में वसंत पंचमी पर शाहजी मंदिर का वसंती कमरा खोला गया। इसमें विराजमान श्रीजी ने श्रद्धालुओं को दर्शन दिए।

यह कमरा वर्ष में दो बार खुलता है। इससे प्रभु के विशेष दर्शन के लिए सुबह से ही भक्तों की भीड़ लग गई। भक्तों में राजशाही झाड़ फानूस की रंग बिरंगी झिलमिल रोशनी के बीच ठाकुरजी की एक झलक पाने को होड़ मची रही। टेड़े-मेड़े

खांभों के मंदिर के साथ देशभर से आए श्रद्धालुओं ने प्रभु दर्शन का भरपूर आनंद लिया।

मंदिर के शाह प्रशांत कुमार ने बताया कि बुधवार सायं छह से देर रात तक एक बार फिर वसंती कमरा में प्रभु शाह बिहारी दर्शन देंगे।

इस बीच भजन संख्या का आयोजन है। उन्होंने बताया कि शाहजी मंदिर में बने वसंती कमरे का विशेष एवं प्राचीन महत्व है। इसमें प्रभु वर्ष भर में दो बार वसंती कमरे में विराजमान हो भक्तों को दर्शन देते हैं।

शाहजी मंदिर में प्रभु दर्शन पाने के लिए सुबह से ही बड़ी संख्या में भक्तों ने डेरा डाल दिया। प्रातः दस बजे जैसे ही प्राचीन वसंती कमरा के पट खुले श्रद्धालु प्रभु शाह बिहारी जी के दर्शन के लिए उमड़ पड़े। जयकारों से पूरा मंदिर गुंजायमान हो उठा।

सेवायत शाह प्रशांत कुमार ने भगवान का वेद मंत्रोंच्चारों के बीच अभिषेक व भव्य शृंगार किया। इस प्राचीन एवं ऐतिहासिक कमरे में ही छप्पन भोग लगाया गया।

बड़े-बड़े शोभायमान प्राचीन झाड़ फानूसों के मध्य से निकलता रंग बिरंगा विद्युत् प्रकाश प्रभु के प्राचीन कमरे की दैदीयमान छटा बिखेर रहा था। स्थानीय भक्तों के साथ देशभर से आए श्रद्धालुओं ने प्रभु दर्शन का भरपूर आनंद लिया।

मंदिर के शाह प्रशांत कुमार ने बताया कि बुधवार सायं छह से देर रात तक एक बार फिर वसंती कमरा में प्रभु शाह बिहारी दर्शन देंगे।

इस बीच भजन संख्या का आयोजन है। उन्होंने बताया कि शाहजी मंदिर में बने वसंती कमरे का विशेष एवं प्राचीन महत्व है। इसमें प्रभु वर्ष भर में दो बार वसंती कमरे में विराजमान हो भक्तों को दर्शन देते हैं।

कन्नड़ भाषा के प्रयोग को अनिवार्य किए जाने संबंधी विधेयक पेश

बेंगलुरु। कर्नाटक विधानसभा में गत मंगलवार को व्यवसायियों एवं प्रतिष्ठानों के साइन बोर्ड में 60 प्रतिशत कन्नड़ भाषा के उपयोग को अनिवार्य करने वाला एक विधेयक पेश किया गया।

कन्नड़ भाषा व्यापक विकास (संशोधन) विधेयक 2024-2022 के अधिनियम में संशोधन किया जायेगा। संशोधन में यह प्रावधान है कि वाणिज्यिक, औद्योगिक एवं व्यवसायिक उपक्रमों में न्यासों, परामर्श केन्द्रों अस्पतालों, प्रयोगशालाओं, मनोरंजन केन्द्रों तथा होटलों और सरकार या स्थानीय अधिकारियों से मंजूरी प्राप्त प्रतिष्ठानों के साइनबोर्डों में 60 फीसदी भाषा का प्रयोग किया जायेगा।

अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप होंगे राष्ट्रीय राजमार्ग देहरादून।

देश में रोड इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने के लिए केंद्र सरकार नए-नए एक्सप्रेसवे और हाईवे का निर्माण कर रही है। आपको जानकार हैरानी होगी कि महज 2 साल के अंदर उत्तर भारत के एक राज्य की सड़कें, अमेरिका के रोड की तरह हो जाएंगी। इस राज्य में कई बड़े रोड प्रोजेक्ट्स पर काम चल रहा है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने मंगलवार को कहा कि केंद्र सरकार, उत्तराखंड में सड़क बुनियादी ढांचे पर 2 लाख करोड़ रुपए खर्च करने जा रहा है और 2024 के अंत तक इसकी सड़कें अमेरिका के रोड जैसी हो जाएंगी। गडकरी टनकपुर में दो हजार करोड़ रुपए से अधिक की राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखे जाने के अवसर पर यह बात कही। उन्होंने कहा, 'वर्तमान में उत्तराखंड में सड़क बुनियादी ढांचे पर 1.40 लाख करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं, जिसमें जल्द ही 60 हजार करोड़ रुपए जोड़े जाएंगे, जिससे कुल खर्च दो लाख करोड़ रुपये हो जाएगा।'

गडकरी टनकपुर में दो हजार करोड़ रुपए से अधिक की राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखे जाने के अवसर पर यह बात कही। उन्होंने कहा, 'वर्तमान में उत्तराखंड में सड़क बुनियादी ढांचे पर 1.40 लाख करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं, जिसमें जल्द ही 60 हजार करोड़ रुपए जोड़े जाएंगे, जिससे कुल खर्च दो लाख करोड़ रुपये हो जाएगा।'

नितिन गडकरी ने की घोषणा

'मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की उपस्थिति में मैं घोषणा करना चाहता हूं कि 2024 के अंत तक, उत्तराखंड में राष्ट्रीय राजमार्ग अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप होंगे। वे अमेरिका के समान होंगे। 2014 में उत्तराखंड में 2,517 किमी राष्ट्रीय राजमार्ग थे, जो अब बढ़कर 3,608 किमी हो गए हैं।'



बीएचयू के स्थापना दिवस पर निकाली गई भव्य शोभायात्रा



वाराणसी। बीएचयू में 109वें स्थापना दिवस समारोह को लेकर बुधवार को उत्सव जैसा माहौल देखने को मिला। परिसर में आकर्षक झांकियां निकाली गईं तो रामधुन पर छात्र थिरकते रहे। इस दौरान जय श्री राम के जयकारे भी गूंजते रहे।

मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति प्रो. पंजाब सिंह ने मालवीय भवन के सामने बने मंच से कुल. पति प्रो. सुधीर कुमार जैन के साथ बैठकर झांकियों को देखा।वाराणसी। स्थापना दिवस

समारोह में सुबह ट्रामा सेंटर परिसर स्थित स्थापना स्थल पर सबसे पहले कुलपति प्रो. सुधीर कुमार जैन ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजन कराया। इसके बाद परिसर के संस्थानों, संकायों की ओर से आकर्षक झांकियां निकाली गईं।

इस दौरान आईएमएस बीएचयू के झांकी में बीएचयू अस्पताल, ट्रामा सेंटर की झांकी में जहां आयुष्मान योजना से गंभीर बीमारियों के निःशुल्क इलाज की झांकी दिखाई गई तो

आयुर्वेद संकाय की झांकी से छात्रों ने योग से निरोग रहने का संदेश बांटा। इसके साथ ही सेंट्रल हिंदू गर्ल्स और ब्यायज स्कूल के छात्र-छात्राओं ने चंद्रयान का मॉडल बनाया। वहीं जी 20 के साथ तकनीकी विकास को भी दर्शाया गया।

झांकियों में विभागों, संकायों की उपलब्धियां भी दिखाई गईं। साथ ही पर्यावरण संरक्षण, अच्छी सेहत का संदेश भी छात्र-छात्राओं ने दिया।

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में दीप प्रज्ज्वलन एवं सेवा शपथ समारोह

‘रोगियों को स्वस्थ करने में परिचारिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका’

छडी. एस. अजीथा ने तीन सौ प्रशिक्षुओं को दिलाई सेवा शपथ
दीप प्रज्ज्वलन समारोह सात्विक परम्परा में सेवा शपथ का हिस्सा: मेजर जनरल अतुल बाजपेई

गोरखपुर। चिकित्सक सिर्फ दवा लिखते हैं जबकि नर्स रोगियों के पास सर्वाधिक समय व्यतीत करते हुए उन्हें दवा देती हैं। उनकी देखभाल करती हैं। रोगी को स्वस्थ करने उन्हें मानसिक रूप से लड़ने को तैयार करने में नर्सों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वास्तव में नर्सों की भूमिका हमें यह बताती है कि रोगियों की सेवा से बढ़कर कोई और धर्म नहीं है।

यह बातें महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कही। वह बुधवार को बसंत पंचमी के पावन अवसर पर गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग के 'दीप प्रज्ज्वलन एवं सेवा शपथ ग्रहण समारोह' में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रो. सिंह ने कहा कि एक सफल एवं कुशल परिचारिका के लिए अनुरक्ति, सत्यता, दक्षता और बुद्धिमत्ता जैसे गुण आवश्यक होते हैं। उन्होंने नर्सों की मेडिकल क्षेत्र में भूमिका को समझाते हुए शपथ समारोह में शामिल छात्राओं को पूर्ण मनोयोग और निष्ठा से काम करने के लिए प्रेरित किया।

समारोह की विशिष्ट अतिथि अपर मुख्य सचिव अल्पसंख्यक कल्याण विभाग डॉ. मो. निका एस. गर्ग ने कहा कि गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज आफ नर्सिंग से पढ़कर निकलीं



परिचारिकाएं अन्य संस्थानों की परिचारिकाओं की अपेक्षा अधिक प्रभावी, अधिक दक्ष और अधिक सेवाभावी होंगी। कारण, यहां की प्रशिक्षित परिचारिकाएं संस्थान के पाठ्यक्रम के साथ धर्म-अध्यात्म के बल पर सेवा की जो प्रेरणा प्राप्त कर रही हैं। विशिष्ट अतिथि गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक कर्नल डॉ. राजेश बहल ने कहा कि नर्सिंग प्रशिक्षुओं ने आज जिस प्रज्ज्वलित दीप के समक्ष जो प्रतिज्ञा की है, वह सेवा संकल्प का दीप है। सेवा के इस प्रतिज्ञा दीप से चिकित्सा जगत अधिक संपन्न और प्रकाशित होगा। समारोह की अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेयी ने कहा कि श्रीगोरक्षपीठ की तरफ से चिकित्सा एवं शिक्षा के लिए 1932 में ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथजी महाराज

ने ऐसा दीप जलाया जो आज विस्तृत फलक पर प्रकाशित हो रहा है। इस दीप को ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज और उनके बाद इस विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलाधिपति गोरक्षपीठाधीश्वर, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रकाशित किया है। उन्होंने कहा कि नर्सिंग प्रशिक्षुओं का दीप प्रज्ज्वलन समारोह उसी सात्विक परंपरा में सेवा शपथ का हिस्सा है जो श्रीगोरक्षपीठ की संस्थाएं लोक कल्याण के लिए लेती रहती हैं। इस अवसर पर गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्रिंसिपल डॉ. डीएस अजीथा ने विभिन्न पाठ्यक्रमों के तीन सौ प्रशिक्षुओं को सेवा शपथ दिलाई।

इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव समेत सभी शिक्षक, विद्यार्थी उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन पैरा मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल रोहित कुमार श्रीवास्तव ने



गोरखपुर। बरीसन से गोरखपुर में भोजपुरी के काम में लागल भोजपुरी संगम के 168 वीं बड़ठी की पिछला दिने चंदेश्वर 'परवाना' का अध्यक्षता आ अवधेश 'नंद' के संचालन में 66 खरैया पोखरा, बशारतपुर, गोरखपुर में बड़ठल। बड़ठकी के पहिलका डेग 'भोजपुरी कविता में सामाजिक चेतना' विषय पर बतकही करे में चलल।

बतकही के शुरुआत करत यशस्वी यशवंत के आलेख के पाठ करत डा. विनीत मिश्र कहलन कि भोजपुरी के अपना लिखनई-कविताई में रेघरिअवलो बा। बतकही के आगे बढ़ावत बागेश्वरी मिश्र 'वागीश' कहलन कि भोजपुरी साहित्य में सामाजिक चेतना सिर्फ गीत, गवनई, कहानी, नाटक में नइखे रहि गइल बलुक मुह. त्वरन, कहावतन, जोगीरा, संस्कार गीत, श्रम गीत वगैरह अनेके विधा में उजागर होत आइल बा। ई सब अपना गूढ़ अर्थविन्यास अउर चिंतन का दृष्टि से बहुते खास बा। जयप्रकाश मल्ल के

कहना रहल कि भोजपुरी सिनेमा आ गायकी का जरिए उपजल फूहड़ता सामाजिक चेतना का दृष्टि से एगो कोढ़ बा। (अंजोरिया एह बात से एकदमे असहमत रहत आइल बिद्या आ आगहू असहमते रही दृ संपादक) एह महान चिन्तक के कहना रहल कि भोजपुरी के एह भयावह रोग से उबारे के जिम्मेदारी साँच साहित्यकारने पर बा।

बतकही में डॉ. फूलचंद गुप्त कहलन कि भोजपुरी में फूहड़ता परोसे के दोष साहित्यकार पर ना बलुक नचनियन-गवनियन पर लगावे के चाही। कहलन कि हम ओकरे के सुनतो रही आ ओकरे के फूहड़ो बतावत रही, ई दूरंगी ठीक नइखे। चंदेश्वर 'परवाना' कबीर के पूर्णता में भोजपुरिया कवि बतलवलें आ बतकही सत्र के निष्पक्ष भाव से सरहलें। संगम के दुसरका डेग में हमेशा का तरह कविता पाठ भइल। एहमें अरविंद 'अकेला', नर्वदेश्वर सिंह, कुमार अभिनीत, चन्द्रगुप्त वर्मा 'अकिंचन', सूरज राम 'आदित्य', सुधीर श्रीवास्तव 'निरज', डा. बहार गोरखपुरी, प्रेमनाथ मिश्र, राम समुझ 'सौंदरा', निर्मल गुप्त, जय प्रकाश मल्ल, 'अक्षर', 'नंद', बागेश्वरी मिश्र 'वागीश', डा. फूलचन्द गुप्त आ चन्देश्वर 'परवाना' वगैरह कवि अपना सशक्त रचनात्मक प्रस्तुतियन से बड़ठकी के गौरवान्वित कइल. आभार संज्ञापन संयोजक कुमार अभिनीत कइलन।

कांग्रेसियों में भाजपाई बनने की होड़ के चलते विपक्ष हो रहा

पहले विपक्षी गठबंधन बना जिसमें 26 बड़े नेता एक मंच पर आए उछले, कूदे गुर्ग्राए फिर एक के बाद एक उनमें से कई बड़े नेता दल बदलते हुए नजर आए । कुछ अपने महत्वकांक्षा के कारण तो कुछ अपने पुत्रों का भविष्य बनाने के लिए, कुछ इंडी सीबीआई से डरकर क्योंकि वो अपने किए हुए भ्रष्टाचारों की आहट से परेशान थे तो कुछ सत्ता की चाह में नैतिकता के मापदंड समाप्त कर विपक्ष का साथ छोड़ रहे। सबसे पहले बगावत में नीतीश ने गठबंधन का साथ छोड़ा और बिहार में आया राम गया राम की परिभाषा बदल दी फिर उत्तर प्रदेश में जयंत ने अपने दादा की विरासत को तरजीह दी और जातिवादी सपा को वॉकर मार निकल लिए। हरियाणा वालों ने किसानो की जगह जाटों को फिट करना शुरू कर दिया इसलिए आंदोलन भी सीमित कर दिया गया! हैदराबाद के निजाम के खिलाफ हिंदुस्तान के संघर्ष की कहानी लिखने वाले शंकर राव चव्हान के बेटे अशोक चव्हान ने आदर्श सोसाइटी घघले के चलते आत्मसमर्पण कर गए ! सिल. सिला यहीं नहीं रुका है जो हर नया सर्वे आ रहा है उसमें मीडिया के सर्वो में भी विपक्ष पिछड़ती नजर आ रही है! और इसी के चलते आर्तकित गठबंधन के रणनीति कारों की रणनीति लगातार इंडी गठबंधन के कमजोर हिस्सों पर आक्रमण करती नजर आई ! एकनाथ शिंदे अजीत पवार मायावती नीतीश कुमार जयंत चौधरी अशोक चौहान उसके बाद भी एक लंबी फेहरिस्त है जो भाजपा के पर दाव लगा रही है!

दिल्ली में अरविंद केजरीवाल भी अलग सुर अलाप रहें। कर्नाटक में डीके शिवकुमार मध्य प्रदेश में कमलनाथ राजस्थान में सधिन पायलट और महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे ऐसे कई वजनदार नाम है जिनके िखलाफ सोशल मीडिया पर अफवाहें चलाई जा रही है!और आज नहीं तो कल ये विपक्ष के लिए कमजोर कड़ी साबित होंगे।दरअसल कांग्रेस की एक बुरी फितरत रही है वह पहले अपने अल्पसंख्यक एजेंडे के माध्यम से एक माहौल बनाती है और फिर कुछ

मध्यस्थो द्वारा चर्चा की जाती है और उसके बाद भय या प्रलोभन दिखाकर हिन्दू विरोध में आस्थाये परिवर्तित की जाती है! लेकिन यही एक रणनीतिक चूक भारतीय जनता पार्टी द्वारा भी की जा रही है! थके हुए भ्रष्ट नेताओं की एक पूरी जमात उन्होंने अपने साथ शामिल कर ली है जो अभी मोदी लहर में तैर रहें , विपक्ष जो न सिर्फ अप्रसांगिक होती जा रही हैं बल्कि अपना आधार वोटर खो चुकी हैं! उनके भ्रष्टाचार में संलिप्त नेताओं के कारनामों और उनसे बचने के लिए बदलती आस्थाओं की वजह से वह जनता की निगाह में भी जमीन खो चुके हैं! कांग्रेस साहस नहीं कर पा रही नई पीढ़ी को आगे लाने का और लायबिलिटी हुई भ्रष्ट नेताओं के इस जमात से पीछे छुड़ाने का वह भारतीय जनता पार्टी के इन प्रयासों के कारण एक स्पेस दे रही है नए नेताओं को और हिंदुत्व के विचारधाराओं के प्रति जो लोग नफरत से खड़े हैं उनके लिए आशाओं का केंद्र बन रही है! कांग्रेस को लेकर एक और आला.चना की जा रही है इसका प्रबंधन ढीला डाला है वह अभी तक सीट शेयरिंग नहीं कर पा रही उसके पीछे का कारण भी शायद यही है वह प्रतीक्षा कर रही है उन सब तत्वों का भारतीय जनता पार्टी में विलीनीकरण होता हुआ देखना जो उनके लिए भी संदेह का कारण बने हुए है। रावण के साथ विशाल सेना थी, कौरवों के साथ पूरे देश के बड़े-बड़े सेनापति लेकिन राम के साथ जन्म आस्था थी और पांडवों के साथ कृष्ण के रूप में सच्चाई थी । गठबंधन अगर यह सोचती है अप्रासंगिक हुए इन आयतित नेताओं से अगर वह माहौल बदलने में कामयाबी हासिल कर लेगी तो यह उसकी भूल है! जब इस देश ने उनके मास्टर स्ट्रोक के ऊपर भी हिंदुत्व के मुद्दों को प्राथमिकता देना प्रारंभ कर दिया है तो यह थके हुए हिंदुत्व विरोधी नेता उनकी कितनी मदद कर पाएंगे यह भविष्य के गर्त में है। चुनाव परिणाम बाकी की कहानी खुद सुना देगा।

पंकज कुमार मिश्रा,
जौनपुर यूपी



आसान नहीं है डगर राजनीति की

तमिल सुपरस्टार विजय ने अपनी नई राजनीतिक पार्टी स्थापित कर दी है। अपनी पार्टी तमिझागा वेत्री कजगम के स्थापना के बाद विजय के अनुसार, एक और फिल्म साइन की है और मैं इसे पूरा करूंगा और अंततः खुद को राजनीति में शामिल करूंगा। मैं लम्बे समयसे अपनी राजनीतिक यात्राके लिएखुदको तैयार कर रहा हूं। मैं खुद को तमिलनाडु के लोगों के लिए समर्पित कर दूंगा। यही एकमात्र तरीका है जिसे मैं अपने लोगोंको वापस लौटा सकता हं।

राजनीति में आने वाले अधिकांश लोग स्वयं को सच्चे हितैषी के रूप में प्रदर्शित करना चाहेंगे। महान पूर्व मुख्यमंत्री एम. जी, रामचंद्रन (एमजीआर), जे.जयललिता और अन्यके बाद सुपरस्टार कमल हासन और विजयकांत ने पहले राजनीति में कदम रखा था।

एमजीआर का आधार द्रमुक में था। इसके विपरीत जयललिता द्रमुक विरोधी रूप अपना कर फली-फूलीं। कमल हासन नें मक्कलनिधि मय्यम नाम से अपनी राजनीतिक पार्टी की स्थापना की। हालांकि उनकी पार्टी ने 2019 और 2021 के चुनावों में कोई सीट नहीं जीती।

विजयकांत की शुरुआत अच्छी रही लेकिन वह अपने राजनीतिक करियर को बरकरार नहीं रख सके और दुर्भाग्य से हाल में उनका निधन हो गया। यह जानना दिलचस्प है कि राजनीति में प्रवेश करने वाले कुछ अभिनेताओं को सफलता मिली जबकि अन्य को सफलता नहीं मिली। सफल नेताओं में एमजी रामचन्द्रन, जे. जयललिता, एम.करुणानिधि, सी. एन. अन्नादरई, और

कैप्टन विजयकांत शामिल हैं। हालांकि शिवाजी गणेशन, सत्थ कुमार, नैपोलियन और एस.एस. राजेंद्रन असफल रहे।अफवाह है कि विजय हर फिल्मके लिए 150 करोड़ रुपए की भारी कमाई करते हैं। उनके पास बहुत कम प्रतिस्पर्धा है। विजय 2026 के विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ेंगे। उनके पास अपनी पार्टी बनाने और द्रमुक के विकल्प के रूप में जनता का विश्वास जीतने का समय है। पीढ़ीगत बदलाव में उनके प्राथमिक प्रतिद्वंदी उदयनिधि मारन होंगे, जो कि एक मंत्री और तमिलनाडु के मुख्य मंत्री एम.के. स्टालिन के बेटे हैं।

विजय की चुनौती विभिन्न राजनीतिक दलों के मतदाताओं को अपने पक्ष में करना है। इनमें सत्तारूढ़ द्रमुक और मुख्य विपक्षी दल अन्नाद्रमुक शामिल हैं। अन्य नाम तमिलर काची (एनटीके), भारतीय जनता पार्टी, वन्नियार—प्रभुत्ववाली पट्टाली मक्कल काची(पीण्मण्के), कमल हासन की मक्कल निधि मय्यम और विदुथलाई चिरुथिगलकाची (वीसीके) हैं।

इससे पहले, विजयने 2011 में इंडिया अगेंस्ट क्रूशन आन्दोलनका समर्थन किया था। विजय के सामने चुनौतियां कई हैं। वह एक राजनेताकी प्रशंसा करनेवाले राज्य में सफल हो सकते हैं। वह युवा (49) हैं और बीड-खींचने वालेमात्र व्यक्ति हैं। वह सही समयपर राजनीतिमें पहुंचनेकीतैयारीमें हैं। विजय को अपनी राजनीतिक विचारधारा को परिभाषित करना चाहिए। विजय को यह बताना होगा कि वह किस राजनीतिक दलके खिलाफ लड़

रहे हैंद्रमुक, अन्नाद्रमुक या भाजपा। एक नवागंतुक के रूप में उनका एकमात्र संभावित विकल्प सत्तारूढ़ सरकार, द्रमुक का विरोध करना है। यही वह रणनीति थी जिसने जे. जयललिता के लिए काम किया, जिन्होंने खुद को द्रमुक विरोधी और करुणानिधि विरोधी के रूप में स्थापित किया और एक सफल राजनीतिज्ञ बन गईं। सवाल यह कि क्या विजय तमिलनाडुमें द्रमुक, अन्नाद्रमुक और अन्य पार्टियों के बोटो पर असर डाल सकते हैं।

पचास वर्षों तक, इन पार्टियों ने राज्य में बारी-बारी से शासन किया है, प्रत्येक के पास 30 प्रतिशत मजबूत वोट आधार है।

द्रमुक ने जहां बुनियादी ढांचे पर ध्यान केंद्रित किया, वहीं अन्नाद्रमुक ने लोक लुभावन योजनाएं लागू कीं। विजय जीतें या न जीतें, लेकिन उनकी पार्टी बाकी िखलाड़ियोंपरअसर डालेगी। 2026 के चुनाव में अपनी सफलता सुनिश्चित करने के लिए विजय को बृथ समितियों के गठन पर ध्यान देने की जरूरत है। चूंकि द्रमुक और अन्नाद्रमुक के पास पहले से ही एक ठोस मतदाता आधार है, इसलिए उन्हें अपने ग्रामीण समर्थकों को वास्तविक मतदाता बनने के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है। उ्हें प्रेरित करना और सक्रिय मतदाताओं में परिवर्तित करना ही जीत की कुंजी है। विजय के भविष्य के बारे में भविष्यवाणी करना जल्दबाजी होगी। हालांकि यहएक असाधारण उपलब्धि होगी यदि वह तमि. लनाडु में और एनटीए एमजीआर की तरह सफल हुए।

—**कल्याणी शंकर**

क्षेत्रीय भाषाओं के सम्मान की खातिर

मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषामें प्रश्न पत्रोंको समझने और उसका लिखित उत्तर देना आसान होगा जिससे अभ्यर्थियों के चयन की सम्भावनाएं बढ़ेंगी।

भाषाओं को प्रोत्साहन देना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और शाह के नेतृत्व में स्वराष्ट्र मंत्रालय का यह निर्णय क्षेत्रीय भाषाओं का सम्मान है। सिपाही भर्ती परीक्षा कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) कीआयोजित प्रमुख भर्ती परीक्षाओंमेंसे एक है, जिसमें देशभरसे बलों में स्थानीय युवाओं की लाखोंयुवा भार लेते हैं। अब स्वराष्ट्र मंत्रालयके इस

में योगदान देता है। यह मिट्टी को खराब करता है क्योंकि मिट्टी की स्थिति चाहे जो भी हो, कुछ फसलों को प्राथमिकता दी जाती है जिनके ऊपर एमएसपी होता है जिसके परिणामस्वरूप समूह के जल संसाधनों का दोहन, क्षारीयता, लंबे समय में फसलों के उत्पादन में कमी और पर्यावरण को बहुत नुकसान होता है। अगर एमएसपी लाया जाता है तो सरकार की नजर अतिरिक्त व्यय पर होगी जो सालाना 10 लाख करोड़ होगा; जो हमारे पिछले वर्ष के बुनियादी बजट से भी अधिक है। इसलिए इसकी मांग का कोई अर्थ नहीं है। यह सच है की खेती घाटे का सौदा बन गयी है लेकिन खेती क्या किसी भी उत्पाद का मूल्य सरकार तय नहीं कर सकती। सरकार के पास भी आर्थिक स्त्रोतों की एक सीमा होती है।

एमएसपी प्रणाली न्यूनतम मूल्य तय करने वालेकानून की परिकल्पना करती है ताकि किसान को आर्थिक रूप से नुकसान न हो। एमएसपी कोलेकर कानूनी बाधाएं एक जटिल मुद्दा है। इसके अलावा, ये सिर्फ कानूनी मुद्दे नहीं हैं, बल्कि कार्यान्वयन के और भी मुद्दे हैं। कानूनी तौर पर इन्हें उतनी आसानी से हल नहीं किया जा सकता है,जितनी किसान उम्मीद कर रहे हैं कि ये हो जाएंगे। पिछले साल ज्वार, तुअर, कपास, उड़दऔर धान (गैर-बासमती) और अखिल भारतीय औसत कीमतें उनके एमएसपी से 5 से 38 प्रतिशत तकअधिक थीं। कर्नाटक में मक्के की कीमतें एमएसपी से अधिक थीं, लेकिन पूरे भारत में वे कम दिख रही थींजो अन्य राज्यों में कम गुणवत्ता के कारण हो सकता है। दर अ स ल क ी म त े

का यहउत्तर—चढ़ाव ही एमएसपी पर गारंटी के लिए सबसे बड़े बाधक के रूप में सामने आ रहा है।दूसरा, पंजाब की मुख्यफसल धान व गेहूँ है, दोनोंपर एमएसपी पहले से है और इसकी खरीद सरकार कर रही है। वहीं, एमएसपी पर कानून बनने से बाकी फसलों कोखरीदना भी सरकार की मजबूरी होगी और उनको स्टोर करना व आगे बेचना सरकार कीजिम्मेदारी बन जाएगी। इसलिए एमएसपी पर कानून आसान नहीं है। एमएसपी हमेशा फसल की एक “फ्रेयर एवरेजक्वालिटी” के लिए दिया जाता है। यानी कि जब फसल की अच्छी क्वालिटी होगी तभी उसकी एमएसपी पर खरीद की जाएगी अन्यथा नहीं। ऐसे में अगर सरकार ने एमएसपी पर गारंटी दे दी तो उस फसल की क्वालिटी अच्छी है या नहीं ये कैसे तय किया जाएगा और अगर फसल तय मानदंडों पर खरी नहीं उतरती है तो उसका क्या होगा।

दूसरा अन्य फसलों को एमएसपी में शामिल करने सेपहले सरकार उसका बजट भी तय करना होगा। देश में पैदा होने वाली हर फसल को एमएसपी के दायरे में लाने की किसानों की बड़ी मांग को मानने का मतलब होगा, पूरा केंद्रीय बजट और इनडायरेक्ट टैक्स के जरिए ज्यादा टैक्सेशन कासामना करना पड़ेगा।

किसानों का फायदा पहुंचाने और उन्हें किसी भी नुकसान से बचाने के लिए फसलों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य की व्यवस्था काफी सालों से चल रही है। केंद्रीय सरकार फसलों की निम्नतम कीमत तय करती है जिसे एमएसपी या फिर न्यूनतम समर्थन मूल्य कहा जाता है। सवाल यह उठता है की क्या एमएसपी कानून बनाने से

बार ऐसा होता है कि कई फ स ल े ए म एस पी से कम या एमएसपी से ज्यादा मूल्य पर बेची जाती है। दरअसल फसलों के दाम बहुत हद तक हालात पर निर्भर करते हैं। इसलिए एमएसपी घोषित होने के बावजूद अलग—अलग दामों पर फसलें बेची जाती है। जब कोई खरीदार न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का भुगतान करने को तैयार नहीं होगा तो सरकार के दाम पर असर पड़ सकता है, क्योंकि निजी व्यापारियों को एमएसपी पर खरीदारी करने के लिए मजबूर करना मुश्किल हो सकता है। साथ ही, जो किसान उक्त फसलें नहीं उगाते हैं वे इस मांग का समर्थन नहीं कर सकते क्योंकि इससे उन्हें कोई लाभ नहीं होगा। ये सरकार ही है कि विपरीत परिस्थितियों में किसानों कि जब पर बोझ नहीं पड़ने देती किसानों को समझना होगा कि एमएसपी घोषित होने से उनका भला नहीं होगा। उनका भला तब होगा जब उनकी कृषि लगत कम होगी और उनकी उपज बिना किसी बिचौलिए के मंडी तक पहुंचेगी। स्टार्टअप के इस युग में किसानों को एमएसपी कि बजाय मार्केटिंग कि मांग करनी चाहिए। एमएसपी कानून से सरकार पर लगभग 10 लाख करोड़ रुपया अतिरिक्त खर्च आएगा। इसके लिए देश का बुनियादी ढांचा ही बिगड़ जायेगा या फिर चिकित्सा /रक्षा खर्च में कटौती होगी। या जनता पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष टैक्स किसानों की सारी समस्याएं हल हो जाएगी? अभी सरकार लगभग 23 फ स ल े ए म एस पी देती है। क्या किसान इन सभी फसलों को एमएसपी पर बेचते है? कई

किसानों की सारी समस्याएं हल हो जाएगी? अभी सरकार लगभग 23 फ स ल े ए म एस पी देती है। क्या किसान इन सभी फसलों को एमएसपी पर बेचते है? कई किसानों की सारी समस्याएं हल हो जाएगी? अभी सरकार लगभग 23 फ स ल े ए म एस पी देती है। क्या किसान इन सभी फसलों को एमएसपी पर बेचते है? कई किसानों की सारी समस्याएं हल हो जाएगी? अभी सरकार लगभग 23 फ स ल े ए म एस पी देती है। क्या किसान इन सभी फसलों को एमएसपी पर बेचते है? कई

जॉ. सत्यवान सौरभ,

एक वैचारिक विपन्नता

देश में भारतीय प्रतिभा का समुचित विकास हो रहा है तो इसके लिए अधिकतर व्यक्ति अभावग्रस्त भी है। साधनों के अभाव को दोष दे रहे हैं। किन्तु यह पूर्ण सत्य नहीं है। मूल बात तो यह है कि भारतीय जन-जीवन में जो विकृ तियां इन दिनों व्याप्त हो रही हैं। उनमें ही एक विकृति अपनी विचार विपन्नता की है।

अक्सर सुना जाता है कि हम भी बहुत कुछ कर लेते किन्तु हमारे पास साधन नहीं है। मैं कहता हूं कि जितने साधन हैं उनका उपयोग करके भी कुछ तो श्रेष्ठ कर किन्तु नहीं वह करेगा नहीं। यही सोचता बोलता रहेगा कि मेरे पास साधन नहीं है। आलस्य और प्रमाद एक बहाना चाहता है। साधन के अभाव का बहाना आसानी से मिल जाता है। अतः उसे दुहराते रहेंगे और अपने विकासकोकृद्रित करते रहेंगे।

देश विदेश के आविष्कारों और श्रेष्ठ आदर्शों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि जितने भी आविष्कार हुए या जो महत्वपूर्ण कार्य हुए वे अभावों के बीच हुए। साधन संपत्रता से नवसर्जन के द्वार बन्द ही हुए हैं खुले नहीं, हां अभावों में अवश्य विकास की किरण जागती हुई दिखाई दी है। मानव के पास अपना मस्तिष्क और अपना देह है। ये ही अनमोल सिद्धियां हैं। ये उपलब्ध है तो फिर अन्य साधनों का क्या वे तो मिले या न मिले। मस्तक स्वस्त: मानवके विकासका मार्ग प्रशस्त करदेता है। करोड़ों का धन भी जो सफलता नहीं दे सकता मस्तिष्क वह सफलता प्रदान कर ही देता है। अपने मस्तिष्क में विकृत विचार न हों और सम्यक कार्य विधि हों तो बढ़ते हुए प्रगति चरण कोई नहीं रोक सकता। अन्त विश्वास बड़ी चीज है। धैर्य दक्षता के साथ अपने कदम बढ़ायें तो साधन अनायास ही सामने उपर्धित रहेंगे।

कांतिलाल मांडोट

सूरत।

बसंत है ऋतुराज

भगवान ने इस ब्रह्मांड में छः ऋतु हैं बनाये बसंत,गर्मी,वर्षा, सर्दी, हेमंत और शिशिर इक आये तो दूजी जाए बसंत ऋतु सब ऋतुओं का सरताज कहाये सृष्टि के हर जीव में नई ऊर्जा का संचार कराए सरसों पर मानो सोना है खिलता जौ और गेहूँ पर बलियां लहराती आमों पर जब बौर आ जाता हर तरफ तितलियां मंडराती फूल खिलते उपवन उपवन खुशबू चारों ओर फैलाये कोयल जाकर डाली डाली अपना मधुर राग सुनाए फूल फूल पर बैठा भंवरा मस्ती में वह गुनगुनाए उसकी गुंजन को सुनकर मेरा मन भी चंचल हो जाये डाली डाली पर छा रही बसंत में यौवन की बहार नवयौवना के चेहरे पर जैसे आ रहा हो निखार नई कोंपलें जब पेड़ों पर आए कुदरत ने जैसे श्रृंगार किया हो ऐसा मनभावन दृश्य जैसे शिशु ने नया जन्म लिया हो माघ महीने के पांचवें दिन इक जश्न मनाया जाता है विष्णु और कामदेव की पूजा होती है यही बसंत पंचमी त्योहार कहलाता है



रवींद्र कुमार शर्मा

धुमारवीं

जिला बिलासपुर हि प्र

मुस्लिम समुदाय भी मनाते हैं बसंत पंचमी का त्यौहार

बसंत पंचमी वैसे तो हिन्दुओं का त्यौहार है, लेकिन आपको ये जानकर हैरानी होगी कि मुस्लिम समुदाय के लोग भी इस त्यौहार को विशेष तौर मनाते हैं। इस दिन दिल्ली की हज़रत निज़ामुद्दीन दरगाह को पीले रंग से सजाया जाता है और लोग दूर-दूर से यहाँ आते हैं और फूलों की होली खेलते हैं।

आज बसंत पंचमी है। इस दिन हिन्दू समुदाय के लोग ज्ञान, संगीत, विद्या और कला की देवी मां सरस्वती की पूजा-अर्चना करते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार माता सरस्वती का अवतरण इसी दिन हुआ था। इसलिए इस दिन मां सरस्वती की विशेष तौर पर पूजा-अर्चना की जाती है। इसके अलावा बसंत पंचमी का त्यौहार बसंत ऋतु की शुरुआत का प्रतीक भी माना जाता है।

बसंत पंचमी वैसे तो हिन्दुओं का त्यौहार है, लेकिन आपको ये जानकर हैरानी होगी कि मुस्लिम समुदाय के लोग भी इस त्यौहार को विशेष तौर मनाते हैं। इस दिन दिल्ली की हज़रत निज़ामुद्दीन दरगाह को पीले रंग से सजाया जाता है और लोग दूर-दूर से यहाँ आते हैं और फूलों की होली खेलते हैं। चलिए आपको बताते हैं हज़रत निज़ामुद्दीन दरगाह पर बसंत पंचमी मनाने का चलन कब और कैसे शुरू हुआ। सूफी संत

हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह पर मनाया जाने वाला बसंत पंचमी का त्यौहार प्रेम और दुख से जुड़ा हुआ है। उनके वंशज और दरगाह समिति के संयुक्त सचिव पीरजादा अल्तमश निज़ामी ने दरगाह पर बसंत पंचमी मनाने की कहानी साझा की। निज़ामुद्दीन औलिया, चिश्तिया सिलसिले के संत थे, जो भारत में चार प्रमुख सूफी संप्रदायों में से एक था। इस सिलसिले को ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने शुरू किया था। निज़ामुद्दीन औलिया ने कभी शादी नहीं की, इसलिए उन्हें कोई संतान नहीं थी। इसलिए वह अपनी बहन के बेटे ख्वाजा तकीउद्दीन नूह से अपने बच्चों जैसा प्रेम

करते थे। ख्वाजा तकीउद्दीन नूह की बीमारी से मृत्यु हो गयी ही, जिसने निज़ामुद्दीन औलिया को काफी दुख पहुंचाया। निज़ामुद्दीन औलिया के भतीजे अमीर खुसरो, जो प्रसिद्ध कवि और संगीतकार थे, ने उनके दुख को बेहद करीब से देखा था। एक दिन खुसरो की नजर हिंदू महिलाओं के एक समूह पर पड़ी, जो बसंत पंचमी का जश्न मना रही थी। बसंत पंचमी, वसंत के आगमन और सरसों की फसल का प्रतीक त्योहार था। इसलिए महिलाओं ने सरसों के फूलों को पहनी थी और पीले कपड़े पहने हुए थे। खुसरो ने महिलाओं से ऐसा करने की वजह पूछी तो महिला



स्पेन की एक महिला आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस से बने पार्टनर से शादी करने जा रही है। ये दुनिया का पहला हाइब्रिड कपल होगा, जिसमें एक इंसान जीता जागता होगा तो दूसरा आर्टिफिशियल होगा, यानी बनावटी होगा। दुनिया में पहली बार एक जीता-जागता इंसान वर्चुअल पार्टनर से शादी करेगा।

दुनिया का पहला ‘हाइब्रिड कपल’ पहली महिला जो एआई होलोग्राम से करेगी शादी

कुछ ही दशकों में टेक्नोलॉजी का विस्तार काफी हद तक बढ़ा है। इसने इंसानी अस्तित्व के हर पहलू को बदल दिया है। पहिए के विकास से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता में नवीनतम प्रगति तक, प्रौद्योगिकी ने आधुनिक दुनिया के विकास में अहम भूमिका निभाई है। लेकिन अगर हम कहें कि इसी टेक्नोलॉजी की बदौलत दुनिया में एक महिला एआई यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से बने पार्टनर से शादी करने जा रही है तो शायद ही इस पर कोई यकीन करेगा।

दअरसल, स्पेन की एक महिला आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस से बने पार्टनर से शादी करने जा रही है। ये दुनिया का पहला हाइब्रिड कपल होगा, जिसमें एक इंसान जीता जागता होगा तो दूसरा आर्टिफिशियल होगा, यानी बनावटी होगा। दुनिया

में पहली बार एक जीता-जागता इंसान वर्चुअल पार्टनर से शादी करेगा। आर्टिस्ट अलिसिया फ्रेमिस एआई से जेनरेट किए गए होलोग्राम से शआदी करने जा रही हैं। यानी अब तक जो चीजें साइंस फिक्शन फिल्मों में देखी जाती रही हैं वे अब हकीकत का रूप ले रही हैं। अलिसिया का पति एक डिजिटल कृति होगा जो होलोग्राफिक तकनीक और मशीन लर्निंग की मदद से बनाया गया होगा। अलिसिया दुनिया की पहली ऐसी महिला होंगी जो इस तरह की शादी करने जा रही हैं। हाइब्रिड कपल नामक अकाउंट से इंस्टाग्राम पर इसके बारे में कई पोस्ट शेयर की गई हैं। वहीं भविष्य में होने वाली शादियों और भविष्य के रिलेशनशिप के लिए ये एक बड़ा संकेत दे रहा है कि आने वाले समय में रिश्तों का किस तरह का रूप देखने को मिल

सकता है। विओन न्यूज के अनुसार, अलिसिया अपनी शादी का वेन्चु भी बुक कर चुकी हैं और उनकी शादी की ड्रेस भी बनवा रही हैं। अलिसिया के मुताबिक उनके पति का नाम एईलेक्स होगा और वह एक अघेड़ उम्र का मेल होलोग्राम होगा। इससे भविष्य में ये होगा कि कोई भी अपनी पसंद का डिजिटल पार्टनर खुद बनाना शुरू कर देंगे। दरअसल, फ्रेमिस की इस शादी के पीछे उनका एक मकसद है। महिला अपने एक नए प्रोजेक्ट पर काम कर रही हैं जिसका नाम हाइब्रिड कपल है। प्रोजेक्ट के तहत महिला प्यार, आत्मीयता और पहचान की सीमाओं के साथ प्रयोग करने जा रही हैं। फ्रेमिस का कहना है कि वह एक्सप्लोर करना चाहती हैं कि डेली लाइफ में एक होलोग्राम के साथ रहना कैसा लगता है।

शहर के दामन पर दाग लगा रहीं छात्रों की आत्महत्याओं की घटनाएं

राजस्थान का कोटा शहर देश में कोचिंग का सबसे बड़ा केन्द्र बन चुका है। यहां प्रतिवर्ष लाखों छात्र कोचिंग करने के लिए आते हैं। जिससे कोचिंग संचालकों को सालाना कई हजार करोड़ रुपए की आय होती है। हालांकि कोटा आने वाले सभी छात्र मेडिकल व इंजीनियरिंग परीक्षा में सफल नहीं होते हैं।

कोटा में एक बार फिर कोचिंग स्टूडेंट के सुसाइड का मामला सामने आया है। छत्तीसगढ़ के रहने वाले स्टूडेंट शुभकुमार चौधरी (16) ने सोमवार रात फंदे पर लटककर जान दे दी। डीएसपी भवानी सिंह ने बताया कि स्टूडेंट 12वीं में पढ़ाई करता था। सोमवार रात जेईई की रिजल्ट आया था। सुबह उसने पैरेंट्स का फोन नहीं उठाया तब वार्डन को कॉल किया। वार्डन ने गेट को धक्का देकर खोला तो स्टूडेंट पंखे पर लटका हुआ था। इस साल कोटा में सुसाइड का यह चौथा मामला है। इसके अलावा 2 फरवरी को गोंडा के नूर मोहम्मद (27) ने, 31 जनवरी को कोटा के बोरखेड़ा की जेईई की निहारिका (18) ने, 24 जनवरी को मुरादाबाद के मोहमद जैद (19) ने आत्महत्या की थी।

राजस्थान का कोटा शहर देश में कोचिंग का सबसे बड़ा केन्द्र बन चुका है। यहां प्रतिवर्ष लाखों छात्र कोचिंग करने के लिए आते हैं। जिससे कोचिंग संचालकों को सालाना कई हजार करोड़ रुपए की आय होती है। हालांकि कोटा आने वाले सभी छात्र मेडिकल व इंजीनियरिंग परीक्षा में सफल नहीं होते हैं। मगर देश की शीर्षस्थ मेडिकल व इंजीनियरिंग संस्थानों में चयनित होने वाले छात्रों में कोटा के छात्रों की संख्या काफी होती है। इसी कारण अभिभावक अपने बच्चों को कोचिंग के लिए कोटा भेजते हैं।

कोचिंग के बड़े केंद्र कोटा में पढ़ने वाले छात्रों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं की घटनाएं शहर के दामन पर दाग लगा रही हैं। वर्ष 2012 से अब तक यहां 148 छात्रों ने आत्महत्या की है। कोटा में कोचिंग संस्थानों में पढ़ाई करने वाले छात्रों द्वारा लगातार की जा रही आत्महत्या की घटनाओं से पूरा देश सकते हैं। सरकार व प्रशासन द्वारा लाख प्रयासों के उपरांत भी कोटा के छात्रों द्वारा आत्महत्या करने की घटनाएं नहीं रुक पा रही हैं।

कोटा में छात्रों द्वारा आत्महत्या करने का मुख्य कारण छात्रों पर पढ़ाई करने के लिए पढ़ने वाले मनोवैज्ञानिक दबाव को माना जा रहा है। कोटा में कोचिंग लेने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष लाखों रुपए खर्च करने पड़ते हैं।

बहुत से छात्रों के अभिभावकों की स्थिति इतना खर्च वहन करने की नहीं होती है। यहां पढ़ने वाले छात्रों में अधिकांश मध्यम वर्गीय परिवारों से होते हैं। उनके अभिभावक आर्थिक रूप से अधिक सक्षम नहीं होते हैं। अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाने के लिए वह लोग विभिन्न स्तरों पर पैसों की व्यवस्था कर बच्चों को कोचिंग के लिए कोटा भेजते हैं।

कोटा आने वाले छात्रों को पता है कि उनके अभिभावकों ने कितनी मुश्किल से कोचिंग लेने के लिए उन्हें कोटा भेजा है। ऐसे में यदि वह सफल नहीं होंगे तो उनके अभिभावक जिंदगी भर कर्ज में दबे रह जाएंगे। यही सोचकर छात्र हमेशा मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करता रहता है। इसके अलावा यहां पढ़ने वाले छात्रों पर पढ़ाई का भी बहुत अधिक दबाव रहता है। यहां के कोचिंग संस्थानों में कई शिफ्टों में अलग-अलग बैच में पढ़ाई होती है। यहां पढ़ने वाले छात्रों पर मेडिकल या इंजीनियर की परीक्षा में अच्छे नंबर हासिल करने को लेकर अभिभावकों व कोचिंग संस्थानों का दबाव होता है।

कोचिंग संस्थान भी अच्छा परिणाम दिखाने के चक्कर में छात्रों को मशीन बनाकर रख देते हैं। छात्रों पर हर दिन पढ़ाई का दबाव बना रहता है तथा साप्ताहिक टेस्ट पास करने के चक्कर में छात्र दिन-रात पढ़ाई करते रहते हैं, जिससे ना तो उनकी नींद पूरी हो पाती है ना ही वह मानसिक रूप से आराम पाते हैं। ऐसे में छात्र जल्दी उठकर कोचिंग संस्थान में जाकर पढ़ाई करने व दिनभर पढ़ाई में व्यस्त रहने के कारण वह तनाव में आ जाते हैं। बाहर से आने वाले बहुत से छात्र पढ़ाई में पिछड़ जाने के डर से आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते हैं।

कोटा कभी राजस्थान का बड़ा औद्योगिक नगर होता था। मगर श्रमिक आंदोलनों के चलते यहां के उद्योग धंधे बंद होते गए। आज कोटा में नाम मात्र के ही उद्योग रह गए हैं। 1990 के दौरान कोटा शहर में कोचिंग संस्थान खुलने लगे थे। 2005 तक यहां बड़ी संख्या में कोचिंग संस्थान स्थापित हो गए जिनमें प्रतिवर्ष



लाखों छात्र पढ़ने लगे। आज कोटा शहर की पूरी अर्थव्यवस्था इन कोचिंग संस्थानों पर ही निर्भर है। शहर के हर चौक-चौराहों पर छात्रों की सफलता से अटे पड़े बड़े-बड़े होर्डिंग्स बताते हैं कि अब कोटा में कोचिंग ही सब कुछ है।

यह सही है कि कोटा में सफलता की दर तीस प्रतिशत से ऊपर रहती है। देश के इंजीनियरिंग और मेडिकल के प्रतियोगी परीक्षाओं में टाप टेन में पांच छात्र कोटा के रहते हैं। मगर उसके साथ ही कोटा में एक बड़ी संख्या उन छात्रों की भी है जो असफल हो जाते हैं। एक अनुमान के मुताबिक कोटा के कोचिंग मार्केट का सालाना आठ हजार करोड़ का टर्नओवर है। कोचिंग सेंटरों द्वारा सरकार को सालाना 500-700 करोड़ रुपये से अधिक टैक्स के तौर पर दिया जाता है।

कोटा में देश के तमाम नामी गिरामी संस्थानों से लेकर छोटे-मोटे 200 कोचिंग संस्थान चल रहे हैं। यहां तक कि दिल्ली, मुंबई के साथ ही कई विदेशी कोचिंग संस्थाएं भी कोटा में अपना सेंटर खोल रही हैं। लगभग ढाई लाख छात्र इन संस्थानों से कोचिंग ले रहे हैं। कोटा में सफलता की बड़ी वजह यहां के शिक्षक हैं। आईआईटी और एम्स जैसे इंजीनियरिंग और मेडिकल कालेजों में पढ़ने वाले छात्र बड़ी-बड़ी कंपनियों और अस्पतालों की नौकरियां छोड़कर यहां के कोचिंग संस्थाओं में पढ़ा रहे हैं। तनख्वाह ज्यादा होने से कोटा शहर में 75 से ज्यादा आईआईटी पास छात्र पढ़ा रहे हैं।

कोटा में बढ़ती आत्महत्याओं की घटनाओं से चिंतित सरकार हरकत में आई है। कोटा में कोचिंग करने वाले छात्रों के लिए अलग से पुलिस थाना खोला गया है। हॉस्टल के कमरों में ऐसे पंखे लगाए गये हैं जिन पर यदि कोई लटकने की कोशिश करेगा तो उस पर लगी डिवाइस में लगा सायरन बजने लगेगा। सरकार ने छात्रों के मानसिक तनाव के विस्तृत अध्ययन के लिए मनोचिकित्सकों की एक टीम भी बनाई है जो छात्रों से मिलकर आत्महत्याओं के कारणों की जांच करेगी। कुछ

दिनों पहले सुप्रीम कोर्ट ने एक सुनवाई के दौरान कहा था कि कोटा में बच्चों की सुसाइड के लिए उनके माता-पिता जिम्मेदार हैं, क्योंकि परिजन अपने बच्चों से उनकी क्षमता से ज्यादा आस लगा लेते हैं। ऐसे में बच्चे डिप्रेशन में आते हैं और खुदकुशी जैसे कदम उठाने को मजबूर हो जाते हैं।

केंद्र सरकार ने कोचिंग संस्थानों के लिए दिशानिर्देशों की घोषणा की है। जिनमें कोचिंग संस्थान 16 वर्ष से कम आयु के छात्रों का नामांकन नहीं कर सकते। इसके अलावा न ही वे अच्छी रैंक या अच्छे अंकों की गारंटी दे सकते हैं और न ही गुमराह करने वाले वायदे कर सकते हैं। छात्रों के आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं को कोचिंग सेंटरों में सुविधाओं का अभाव और उनके पढ़ाने के तौर-तरीकों के बारे में शिकायतें मिलने के बाद सरकार ने इनकी घोषणा की है। दिशानिर्देशों के अनुसार कोई भी कोचिंग सेंटर रनतक से कम शिक्षा वाले ट्यूटर को नियुक्त नहीं करेगा। छात्रों का नामांकन सिर्फ सेकेंडरी स्कूल परीक्षा देने के बाद हो सकेगा। इनमें छात्रों को स्ट्रेस फ्री रखने और फीस रिफंड प्रोसेस को आसान बनाने समेत कई दिशा निर्देश शामिल हैं।

कोटा में कोचिंग छात्रों के सुसाइड मामलों को लेकर प्रशासन के साथ-साथ पुलिस की स्पेशल सेल भी काम कर रही है। लेकिन फिर भी सुसाइड केस थमने का नाम नहीं ले रहे हैं।

सरकार चाहे कितनी भी कोशिश कर ले, कोटा में पढ़ने वाले छात्र जब तक खुले मन से बिना किसी दबाव के पढ़ाई करने लगेंगे तभी यहां का माहौल सुधरेगा। यहां चल रहे कोचिंग संस्थानों को मशीनी स्तर पर चलाई जा रही प्रतिस्पर्धा को रोक कर एक सकारात्मक वातावरण बनाना होगा। तभी कोटा में पढ़ने वाले छात्र खुद को सुरक्षित महसूस कर पढ़ाई कर पाएंगे। कोटा में संचालित कोचिंग संस्थान जब तक अपने काम को पैसे कमाने की मशीन सामझना बंद कर अपने छात्रों के साथ संवेदनशील व्यवहार नहीं करेंगे तब तक कोटा के हालात नहीं सुधरेंगे।

रमेश सर्राफ धनोरा

❷ कर्नाटक के सरकारी स्कूलों की कायापलट, ❷ शिक्षा बजट के लिए 44,422 करोड़ आवंटित बंगलुरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने शुक्रवार को बजट 2024–25 प्रस्तुत किया। सिद्धारमैया सरकार द्वारा 3.71 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया। राज्य में शिक्षा क्षेत्र के लिए योजनाओं की घोषणा करते हुए, मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने शुक्रवार को कर्नाटक में सरकारी स्कूलों और प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों में बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए 850 करोड़ रुपये आवंटित किए और शिक्षा में सुधार के लिए विभिन्न कार्यक्रमों को सूचीबद्ध किया।

उन्होंने यह भी घोषणा की कि प्री-प्राइमरी से प्री-यूनिवर्सिटी शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से कर्नाटक पब्लिक स्कूल स्थापित किए जायेंगे। इसके साथ ही 2,000 सरकारी प्राथमिक स्कूलों को द्विभाषी स्कूलों के रूप में अपग्रेड किया जायेगा। मई 2021 तक, राज्य में कुल 276 कर्नाटक पब्लिक स्कूल हैं। मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि यूनिवर्सिटी ऑफ विश्वेश्वरैया कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग को भी 100 करोड़ रुपये की लागत से आईआईटी की तर्ज पर अपग्रेड किया जायेगा। 2023 के 12 और 2024 के 2 महीनों में कितने लोगों की गई नौकरी? सरकारी स्कूलों और प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों के बुनियादी ढांचे में सुधार कर्नाटक विधानसभा में 2024–25 के लिए राज्य का बजट पेश करते हुए सिद्धारमैया ने कहा, हमारी सरकार ने सरकारी स्कूलों और प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों में बुनियादी ढांचे में सुधार पर जोर दिया है। 2023–24 में इस पर 600 करोड़ रुपये खर्च किये गये। चालू वर्ष में, इस उद्देश्य के लिए 850 करोड़ रुपये प्रदान किए जायेंगे। सीएसआर अनुदान की मदद से एक ही छत के नीचे प्री-प्राइमरी से प्री-यूनिवर्सिटी शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से अधिक



कर्नाटक के मुख्यमंत्री का 2024–25 का बजट

कर्नाटक पब्लिक स्कूल शुरू किए जायेंगे। कक्षा 3 से 5 के लिए शुरू होगा गणित-गणक कार्यक्रम सिद्धारमैया ने घोषणा की कि कक्षा 3 से 5 तक के छात्रों के लिए जे-पाल इंस्टीट्यूट के सहयोग से गणित-गणक कार्यक्रम शुरू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को गणित के प्रति आकर्षित करना और आसान तरीकों से गणित सीखना है। कक्षा 6 और 7 के पिछड़े छात्रों की सीखने की क्षमता में सुधार के लिए 10 करोड़ रुपये की लागत से मारुसिचाना कार्यक्रम शुरू किया जायेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि उच्च नामांकन वाले सरकारी उच्च विद्यालयों में दो साल के पैकेज के तहत विज्ञान और कंप्यूटर लैब और इंटरनेट सुविधा प्रदान करने के लिए 50 करोड़ रुपये आवंटित किये गये हैं। जेईई , एनईईटी, सीईटी प्रशिक्षण सिद्धारमैया ने कहा कि 2,000 सरकारी प्राथमिक स्कूलों को द्विभाषी स्कूलों (कन्नड़ और अंग्रेजी) के रूप में अपग्रेड किया जायेगा। नवु मनुजारू, चर्चा और बहस से जुड़ी दो घंटे की एक इंटरैक्टिव कक्षा, हर हफ्ते सभी स्कूलों और कॉलेजों में आयोजित की जायेगी। उन्होंने कहा कि ये कक्षाएं सामाजिक सद्भाव, वैज्ञानिक स्वभाव और सह-अस्तित्व के विचारों को बढ़ावा देंगी। राज्य के चौहत्तर आदर्श विद्यालयों को वाणिज्य और विज्ञान विषयों के संयोजन के साथ प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों के रूप में उन्नत किया जायेगा। इसके अलावा, 10 करोड़ रुपये की लागत से सबसे अधिक नामांकन वाले 100 सरकारी प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों में कंप्यूटर विज्ञान संयोजन विषय शुरू किए जायेंगे।

मैथ फोबिया से निपटने के लिए अपनाएं ये टिप्स उन्होंने कहा कि जिन प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों में विज्ञान स्ट्रीम में 400 से अधिक छात्रों का नामांकन है, उनमें विज्ञान प्रयोगशालाओं को अपग्रेड करने के लिए प्रत्येक को 10 लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया जायेगा। उन्होंने कहा कि 10 करोड़ रुपये की लागत से सरकारी प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों में विज्ञान स्ट्रीम में पढ़ने वाले लगभग 20,000 छात्रों के लिए नीट, जी सीईटी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। सिद्धारमैया ने कहा, हमारी सरकार ने सभी सरकारी स्कूलों और प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों को मुफ्त बिजली और पानी की सुविधा देने का फैसला किया है। इससे राज्य के 46,829 सरकारी स्कूलों और 1,234 प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों को फायदा होगा। इसके लिए 25 करोड़ रुपये के अनुदान की आवश्यकता होगी। सरकारी महिला प्रथम श्रेणी कॉलेजों और महिला पॉलिटेक्निक हॉगें अपग्रेड उन्होंने कहा, जैसा कि पिछले बजट में घोषणा की गई थी, कर्नाटक राज्य शिक्षा नीति का मसौदा तैयार करने के लिए राज्य शिक्षा नीति आयोग का गठन किया गया है जो वास्तव में राज्य की संस्कृति और पहचान को दर्शाता है। आयोग को जल्द ही अपनी रिपोर्ट सौंपने की उम्मीद है। राज्य शिक्षा नीति आयोग की रिपोर्ट के आधार पर इसे लागू किया जायेगा। उन्होंने कहा कि इस साल 30 करोड़ रुपये की लागत से 30 सरकारी महिला प्रथम श्रेणी कॉलेजों और सरकारी महिला पॉलिटेक्निक को अपग्रेड किया जायेगा। 2024–25 में प्रथम श्रेणी डिग्री कॉलेजों के उन्नयन के लिए 250 करोड़ रुपये और सरकारी पॉलिटेक्निक और इंजीनियरिंग कॉलेजों के उन्नयन के लिए 120 करोड़ रुपये प्रदान किए जायेंगे। मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि शिक्षकों के रिक्त पदों को आवश्यकतानुसार भरा जायेगा और शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की भर्ती के लिए कार्रवाई की जायेगी। उन्होंने कहा कि यूनिवर्सिटी ऑफ विश्वेश्वरैया कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग को 500 करोड़ रुपये की लागत से आईआईटी की तर्ज पर अपग्रेड किया जायेगा। इसके लिए सरकार की ओर से 100 करोड़ रुपये का अनुदान दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि इसके अलावा, सीएसआर फंड और पूर्व छात्रों के योगदान के माध्यम से विश्वविद्यालय के विकास के लिए संसाधन जुटाए जायेंगे।



ऐसी क्या मजबूरी है

बिना रिश्तों के यह जिन्दगी अधूरी है रिश्तों का होना जिन्दगी में बहुत जरूरी है मर मर कर क्यों जी रहे हैं लोग विचार करो क्यों भूल गए रिश्तों की एहमियत ऐसी क्या मजबूरी है माता पिता ने बच्चों को पढ़ाया लिखाया पेट अपना काट कर उनको खिलाया उस पढ़ाई से तो थे अनपढ़ ही अच्छे जिसने मां बाप को बूढ़ाश्रम पहुंचाया अब कहा मिलेगा पुत्र जैसे श्रवण कुमार जिसने माता पिता पर सब कुछ दिया वार आजकल कौन रखना चाहता है पुरानी चीजें माया के इस चक्कर ने कई घर दिए उजाड़ नई पीढ़ी रहने लगी है अब बुजुर्गों से दूर खो गई जवानी नशे में रहती है हरदम चूर संस्कार तो जैसे गुम हो गए अंधरे में कहीं बड़ा बन गया

अगर तो भी काहे का गरूर
रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारघौं
जिला बिलासपुर हि प्र



सी.एस.सी. बाल विद्यालय में बसंत पर्व पर मां शारदा पूजन

हिमाचल प्रदेश (सोलन)। 14 फरवरी बसंत पर्व के अवसर पर सी .एस.सी बाल विद्यालय नालागढ़ में मां शारदा पूजन किया गया । मां शारदा की वंदना करते हुए सभी बच्चों ने मां सरस्वती से प्रार्थना करते हुए पूजन में बड़े उत्साह और खुशी से भाग लिया। मां सरस्वती से शिक्षा और जीवन में ज्ञान प्राप्ति हेतु प्रार्थना की । इस अवसर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों ने पीले वस्त्र पहनकर बसंत पर्व के आगमन और सृष्टि में नव सृजन पर्व का स्वागत किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अपनी वार्षिक फाइल का पूजन किया। इस अवसर पर प्रिंसिपल प्रीति शर्मा "असीम "ने विद्यार्थियों को हल्दी चंदन के तिलक लगाकर उनकी शिक्षा के इस प्रथम कदम को बुलंदियों तक पहुंचने का आशीर्वाद और कामना की ।बच्चों को मां सरस्वती के आशीर्वाद से प्रसाद बांटा गया और नव वर्ष में मां सरस्वती के आशीर्वाद से ज्ञान के क्षेत्र में उच्च स्तर पाने के लिए मां शारदा से प्रार्थना और मंगल कामना की।

प्रिय पाठकों,

इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा-लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।

अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय-समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोर खपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

—व्यवस्थापक

भीख मांगकर 45 दिन में जोड़े ढाई लाख ‘भीख ही तो मांगती हूं, चोरी नहीं करती’



पकड़ाई गई महिला और उसके पति के पास स्मार्ट फोन और गाड़ी भी है। पिछले 8 सालों से दोनों का इंदौर (पदकवतम छमू) आना-जाना है। जब मन होता है, तो बीच-बीच में गांव भी चले जाते हैं और फिर से वापस आ जाते हैं।

इंदौर। शहर से बड़ा हैरान करने वाला मामला सामने आया है, जहां एक महिला ने भीख मांगकर 45 दिनों में ढाई लाख रुपए जोड़ लिए। जब गुरुवार 8 फरवरी को परिवार समेत भी ख मांगते पकड़ाई तो खुलासा हुआ। बता दें, कि महिला जब उज्जैन रोड पर लवकुश चौराहे पर भीख मांग रही थी, तो प्रशासन की टीम ने उससे पूछताछ की। महिला ने बताया कि मैंने कोई चोरी नहीं की है, भीख ही तो मांगती हूं। प्रशासन की टीम ने महिला के साथ जिसमें से 1 लाख रुपए गांव भेजे और 50 हजार रुपए खाते में डाले। इसके साथ ही 50 हजार रुपए की ध्व बच्चों के नाम पर करवाई। बचे 50 हजार रुपए खर्च कर दिए।

बताया कि 15 दिन में 30 से 35 हजार रुपए की कमाई हो जाती है। जब की त्योहर, शादी सीजन होते हैं, तो, 15 दिन में 50 हजार रुपए की कमाई हो जाती है। इतनी बड़ी रकम भी ख में जोड़ लेने के पीछे कहानी यह आई है, कि उज्जैन में महाकाल लोक बनने के बाद बड़ी तादाद में श्रद्धालु यहां से गुजरते हैं। उज्जैन जाने के लिए लवकुश चौराहे से ही

होकर जाना पड़ता है। इसके अलावा सुपर कौंरिडोर की तरफ जाने के लिए भी यही रूट है। जब लोग इस सिग्नल पर (पदकवतम छमू) वाहन चालक रुकते हैं, तो भी ख मांगने वाले लोग उन्हें घेर लेते हैं। घेरने पर महाकाल जाने वाले और वहां से लौटने वाले इन्हें भीख देते हैं, जिससे इनको अच्छी खासी रकम मिल जाती है। बता दें, कि पकड़ाई गई महिला और उसके पति के पास स्मार्ट फोन और गाड़ी भी है। पिछले 8 सालों से दोनों का इंदौर (पदकवतम छमू) आना-जाना है। जब मन होता है, तो बीच-बीच में गांव भी चले जाते हैं और फिर से वापस आ जाते हैं। इतना ही नहीं गांव में घर के साथ-साथ थोड़ी जमीन भी है। परिवार के लोग भी देश के अलग-अलग बड़े शहरों में जाकर भीख मांगने का काम करते हैं।

अगर कभी कोई व्यक्ति किसी स्पोर्ट पर पकड़ा भी जाता है, तो अच्छी कमाई होने के चलते और बड़ी रकम की वजर से उसी स्पोर्ट पर वापस लौट आता है। अगर एक ही व्यक्ति बार-बार पकड़ाता है, तो परिवार के किसी दूसरे सदस्य को वहां भेज देते हैं, लेकिन स्पोर्ट नहीं छोड़ते। इतना ही नहीं दिल्ली, चेन्नई जैसे देशों के बड़े शहरों में इनके परिवार के लोग भीख मांगने जाते हैं और तगड़ी रकम कमाते हैं। शहर में करीब 6 से 7 हजार लोग भीख मांगते हैं, जिसका खुलासा रेस्क्यू के दौरान हुआ। जिसमें से बच्चों की संख्या साढ़े तीन हजार है। सड़क पर 3 कैटेगरी के भिखारी हैं। पहले ऐसे भिखारी जिनका कोई घर नहीं है। दूसरे वे जो बाहर से इंदौर में सिर्फ भीख मांगने के लिए ही आए हैं और तीसरे भिखारी वे हैं, जो किसी गिरोह का हिस्सा हैं।

निजी कोचिंग संस्थानों को लेकर सरकार लागूगी कानून



चंडीगढ़। हरियाणा सरकार निजी कोचिंग संस्थानों के कामकाज को विनियमित करने, भ्रामक विज्ञापनों और छात्रों के बीच बढ़ते तनाव जैसे मुद्दों के समाधान के लिए एक कानून बनाने की तैयारी में है। राज्य सरकार ने पिछले महीने हरियाणा कोचिंग संस्थान (नियंत्रण और विनियमन) विधेयक, 2024 का एक मसौदा सार्वजनिक पटल पर रखा था तथा इस संबंध में हितधारकों और जनता से प्रतिक्रिया

मांगी थी। सूत्रों ने बताया कि विधेयक को 20 फरवरी से शुरू होने वाले आगामी बजट सत्र में पेश किए जाने की संभावना है। विधेयक में निजी कोचिंग संस्थानों के नियंत्रण और विनियमन के साथ उन्हें पंजीकृत करने एवं विनियमित करने का प्रावधान है। इसके साथ ही कोचिंग संस्थानों की अध्ययन सामग्री की लागत तथा अन्य शुल्कों की निगरानी का भी प्रावधान है। विधेयक के मसौदे में छात्रों और उनके अभिभावकों के हितों का ध्यान रखने, कोचिंग संस्थानों में नामांकित छात्रों के बीच तनाव को कम करने और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में बेहतर शैक्षणिक सहायता प्रदान करने का भी प्रावधान है। इसमें छात्रों के हितों को ध्यान में रखकर नियम बनाए गए हैं और नियमों के तोड़े जाने पर कोचिंग संस्थानों पर जुर्माने का भी प्रावधान है।

बृजलोक अकादमी की पहल



आगरा। बृजलोक साहित्य कला संस्कृति अकादमी (ट्रस्ट) ने एक नई पहल शुरू की है। जिसमें गरीब बेटियों की शादी में उपहार स्वरूप एक स्टील का वर्तन भेंट किया जा रहा है। हालांकि इस योजना के अंतर्गत अभी सिर्फ 101 बेटियों को ही यह उपहार प्रदान किया जा रहा है, क्योंकि संस्था की वित्तीय स्थिति ठीक नहीं है। ईश्वर कृपा से संस्था की आर्थिक स्थिति में अगर सुधार होता है तो ऐसी योजनाओं को और बड़ा आकार दिया जायेगा। यह जानकारी ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने दी है।

समाचार पत्र विक्रेता संघ का चुनाव 25 को

गोरखपुर। समाचार पत्र विक्रेता संघ की मासिक बैठक भरवलिया खुर्द में उमाशंकर मझवार की अध्यक्षता में संपन्न हुई। महामंत्री नवनीत कुमार यादव ने पिछले वर्ष का आय-व्यय प्रस्तुत किया तथा समाचार पत्र विक्रेता संघ का वार्षिक चुनाव 25 फरवरी को संघ कार्यालय भरवलिया खुर्द में दो बजे चुनाव अधिकारी रामाज्ञा निषाद की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

जिन सदस्यों को चुनाव लड़ना है वह अपना आवेदन पत्र 20 फरवरी तक चुनाव अधिकारी रामाज्ञा निषाद के पास भरवलिया खुर्द कार्यालय में जमा कर दें। जिन सदस्यों का वार्षिक शुल्क जमा नहीं होगा उनको चुनाव से वंचित कर दिया जायेगा।

बैठक में रामाज्ञा निषाद, नवनीत कुमार यादव, सुनील कुमार गुप्ता, सुबाष चन्द्र मझवार, धर्मेन्द्र कुमार, राहुल गुप्ता, विनोद तिवारी, तिरथ सिंह श्रेष्ठ, दिनेश चन्द्र अग्रहरी, महेश कन्नौजिया, राजकुमार मझवार,विजय कुमार गुप्ता, अनन्त लाल गुप्ता, सुनील साहनी, ओमप्रकाश मझवार, सुभान अल्ला, चन्दन मझवार, हरिलाल मझवार, जुमराती, महमूद हक, अजय कुमार मझवार आदि लोग उपस्थित थे।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक **पंकजधर द्विवेदी** द्वारा जनप्रकाशन प्रेस, निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित। सम्पादक—**पंकज धर द्विवेदी सम्पर्क सूत्र—** e-mail- ghoonghatkibagawat37@gmail.com

